वाप्कोस दर्पण

गृह पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2016 अंक-80 त्रैमासिक

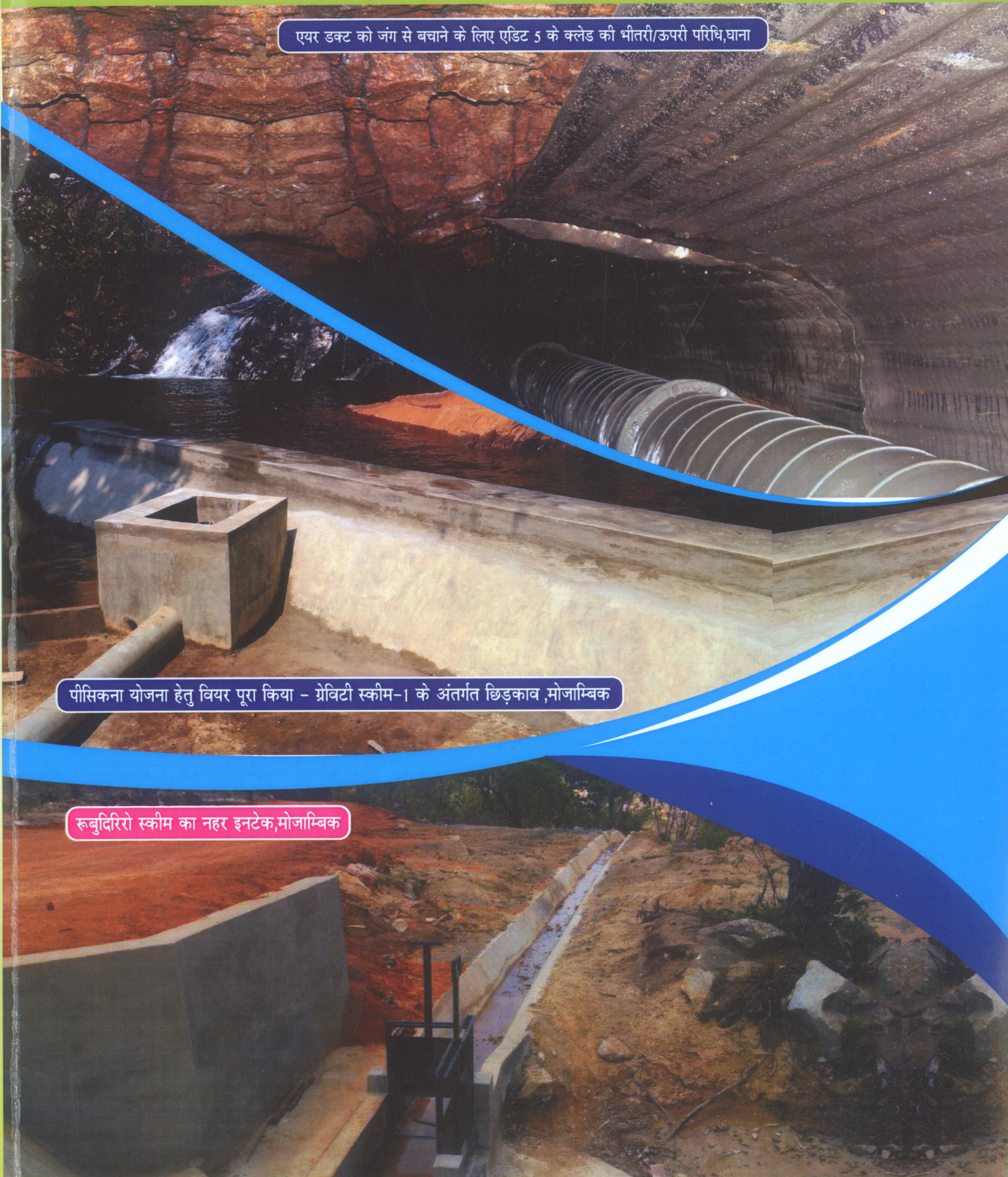

एयर डक्ट को जंग से बचाने के लिए एडिट 5 के क्लेड की भीतरी/ऊपरी परिधि,घाना

पीसिकना योजना हेतु वियर पूरा किया - ग्रेविटी स्कीम-1 के अंतर्गत छिड़काव ,मोजाम्बिक

रूबुदिरिरो स्कीम का नहर इनटेक,मोजाम्बिक

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस श्री एन.हुन–बु टुलेय, कार्यवाहक प्रबंध निदेशक, लाइबेरिया जल व सिवर कारपोरेशन, लाइबेरिया गणराज्य सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस श्री जॉनथन स्मिथ, प्रबंध निदेशक, इनरेफ नोनियस बी.वी., नीदरलैंड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।

वाप्कोस दर्पण

जनवरी-मार्च, 2016

अंक-80

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

संपादन मण्डल
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
एस.विजयराव, वरि.महा प्रबंधक
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

संपादक
निम्मी भट्ट,
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, वरि.अनुवादक
शारदा रानी, सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में

इस अंक में	पृष्ठ सं0
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
सम्पादकीय	2
राजभाषा गतिविधियां	3
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता	4
महिला दिवस की झलकियां	6
लेख - रानी चेन्नमा	8
मेक इन इंडिया – द्वितीय पुरस्कार प्राप्त निबंध	11
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त बोलती तस्वीर	14
लेख – कैसे याद करें	16
कविता – नारी	18
लेख - संस्कार	19
लेख – अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	21
कार्मिक प्रभाग	24
लेख - भारत के प्रथम राष्ट्रपति – डा0 राजेन्द्र प्रसाद	26
लेख – आर्थिक विकास के लिए टेक्नोलॉजी	28
कविता – अपना हाथ दिखाओगी	31
लेख – याद्दाश्त चले जाने का रहस्य	32
लेख – दान का महत्व-2	34
तकनीकी लेख – उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में भागीरथी नदी पर संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण कार्य	40

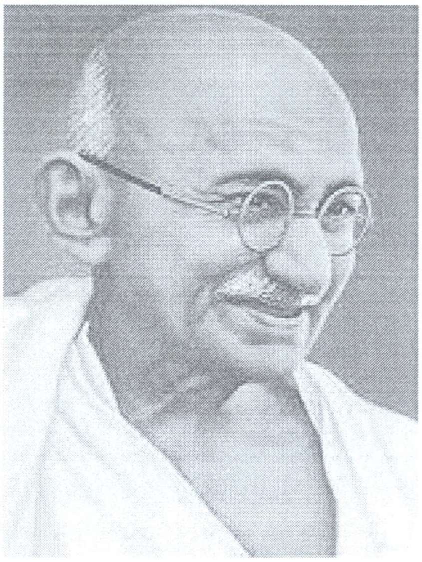

अहिंसा का मार्ग तो कठिन है, लेकिन इसका परिणाम स्थायी और दोनों के लिए ही शुभ है। मार का बदला मार से लेना तो चलता ही आया है। किन्तु उससे जगत में न सुख बढ़ा है, न अन्याय और जुल्म ही दूर हुआ है। उसे मिटाने की कुंजी तो अहिंसा ही है – ऐसा मेरा मानना है।

- सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (खण्ड 65) पृ0 394

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

मुझे खुशी है कि वाप्कोस की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' के इस नवीन अंक के माध्यम से पुनः आपके सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ । इसमें सर्वाधिक गर्व की बात यह है कि पत्रिका बिना एक भी अंक चूके नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में प्रकाशित हो रही है ।

मुझे आपको यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी व्यवसाय योजना के अच्छे निष्पादन एवं नए क्षेत्रों में उद्यमशील विविधीकरण के परिणामस्वरूप हमारी कम्पनी अच्छा लाभ प्राप्त करने और भविष्य में महत्वपूर्ण कार्य पूरा करने में सक्षम है । वाप्कोस एशियन व अफ्रीकन क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बढ़ा रही है । अफ्रीका चुनौतीपूर्ण अवसरों का भण्डार है और हमने अपने ग्राहकों की सेवा करने के बेहतर तरीके खोजे हैं जोकि हमारी सफलता के लिए निर्णायक सिद्ध होंगे । यह सब आप सबके मिले-जुले प्रयासों से संभव है। अतः हमें अतीत से सबक लेना होगा और अपने कौशल को बढ़ाते हुए कम्पनी को उच्च स्तर पर ले जाना होगा ।

मैं चाहता हूं कि सभी कार्मिक अपने कार्यों में भरपूर उत्कृष्टता लाएं ताकि कार्य-निष्पादन गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा किया जा सके । इसके साथ ही कम्पनी की सभी गतिविधियों में राजभाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाए ताकि राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी कम्पनी नए कीर्तिमान स्थापित करे।

शुभकामनाओं के साथ,

आर.के.गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सम्पादकीय

हिन्दी को 'राजभाषा' के रूप में पूर्णतः स्थापित करने की दिशा में सभी कार्यालयों द्वारा अन्मान्य प्रयास किए जा रहे हैं । यह हर्ष का विषय है कि इस कड़ी में हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का प्रकाशन भी एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण कड़ी है ।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में राजभाषा नीति के अंतर्गत प्रकाशित होने वाली विभागीय पत्रिकाओं का अग्रणी स्थान है । हिन्दी पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का नियमित प्रकाशन हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अपनी प्रतिभा तथा कौशल दर्शाने का एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है । मुझे विश्वास है कि हमारे कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी इस अवसर का पूरा लाभ उठाएंगे ।

आज इस सशक्त एवं महत्वपूर्ण कड़ी के माध्यम से मैं आप सबको '8 मार्च यानि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' की हार्दिक बधाई देती हूं । यह दिवस हमें विश्व स्तर पर अपनी उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है । आज आधुनिक युग में कामकाजी महिलाएं दोहरी भूमिका निभाते हुए हर क्षेत्र में अपना परचम लहराते हुए शीर्ष पदों पर भी आसीन हैं । वाप्कोस की महिला कार्मिक भी वाप्कोस की उन्नति का एक अहम हिस्सा हैं । मुझे विश्वास है कि हमें आज जो अवसर मिला है उसे सार्थक करते हुए हम वाप्कोस को शिखर तक ले जाने के लिए समर्पित रहेंगी । इसका श्रेय हमारे अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा दिए गए मार्गदर्शन व उनके विश्वास और सहयोग को जाता है ।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप पत्रिका में प्रकाशित लेखों/कविताओं आदि से आनंदित व लाभान्वित होंगे । पत्रिका के विकास हेतु हम सभी सुधी पाठकों के विचारों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(निम्मी भट्ट)
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

राजभाषा गतिविधियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव की नवगठित समिति की वर्ष 2016 की प्रथम बैठक श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 01.02.2016 को वाप्कोस कार्यालय में आयोजित की गई ।

- दिनांक 04.01.2016 को उप प्रबंधक (रा.भा.) द्वारा वाप्कोस के जल संसाधन विकास प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया ।

- दिनांक 18.03.2016 को श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया ।

- दिनांक 22.03.2016 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) भी उपस्थित थी जिन्होंने हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों के बारे में जानकारी दी तथा नोटिंग/ड्राफ्टिंग का व्यवहारिक अभ्यास कराया ।

(दलीप सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

संसार में केवल मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है जिसे ईश्वर ने हंसने का गुण दिया है, इसे खोइए मत ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गुड़गांव की अध्यक्षता

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अ.शा.पत्र सं.12024/09/2015-रा.भा.(का.2)दिनांक 18.12.2015 द्वारा अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव की अध्यक्षता सौंपी गई है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गुड़गांव, की नवगठित समिति की वर्ष 2016 की प्रथम बैठक श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 01.02.2016 को वाप्कोस कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें नराकास, गुड़गांव के लगभग सभी सदस्य कार्यालयों से कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में वाप्कोस के श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति भी उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा को भी आमंत्रित किया गया था।

सर्वप्रथम वाप्कोस के मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री अमर कुमार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव के नवनियुक्त अध्यक्ष, श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा का पुष्प गुच्छ भेंट कर हार्दिक स्वागत किया गया। अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों/ प्रतिनिधियों/राजभाषा अधिकारियों का इस प्रथम बैठक में हार्दिक स्वागत किया गया। अध्यक्ष महोदय के विधिवत् परिचय के उपरान्त बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों/प्रतिनिधियों/राजभाषा अधिकारियों द्वारा अपना-अपना संक्षिप्त परिचय भी दिया गया।

तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यसूची की मदों के आधार पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) से उपस्थित श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने नराकास एवं राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण नियमों/आदेशों के बारे में बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों को विस्तार से जानकारी दी। नराकास, गुड़गांव की नवगठित समिति की इस प्रथम बैठक का संचालन श्रीमती निम्मी भट्ट, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.), वाप्कोस एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुड़गांव द्वारा किया गया।

(दलीप सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

महिला दिवस की झलकियां

महिला दिवस की झलकियां

रानी चेन्नमा

साभार : भारत की वीरांगनाएं

डलहौजी की प्रेरणा से जब धारवाड़ के अंग्रेज कलेक्टर ने रानी चेन्नमा को सूचित किया कि सरकार उनके दत्तक पुत्र को कित्तूर का उत्तराधिकारी नहीं मानती और कित्तूर के राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लेना चाहती है, तो वीर रानी चेन्नमा ने सिंहनी की तरह गर्जना करते हुए कहा था –''कित्तूर पर अंग्रेजों का अधिकार कभी नहीं होगा । मैं कित्तूर की स्वतंत्रता के विरूद्ध युद्ध करूंगी, अंतिम सांस तक युद्ध करूंगी ।'' और सचमुच वीर रानी चेन्नमा ने हाथ में तलवार लेकर रण के मैदान में अंग्रेजों के साथ युद्ध किया । उन्होंने दो बार अंग्रेजी सेना को युद्ध के मैदान से भगा दिया । उनकी वीरता की कहानी स्वतंत्रता के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी ।

चेन्नमा का का जन्म सन् 1778 काकतीय राजवंश में हुआ था। उनके पिता का नाम धुलप्पा देसाई और माता का नाम पद्मावती था । पिता-माता दोनों सदगुण-सम्पन्न थे, वीर थे और देशभक्त थे । बालिका चेन्नमा बड़ी रूपवती थी । उसके रूप और सुन्दरता के अनुसार ही उनका नाम रखा गया था – चेन्नमा । चेन्नमा शब्द का अर्थ होता है, वह जो देखने में अति सुंदर हो । माता-पिता चेन्नमा जैसी सुन्दर लड़की को पाकर हर्ष से फूले नहीं समाते थे ।

चेन्नमा बड़ी गुणवती थीं । उन्होंने कन्नड़, उर्दू, मराठी और संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था । उन्होंने घुड़सवारी भी सीखी थी और शस्त्र विद्या का भी अभ्यास किया था । बारह-तेरह वर्ष की अवस्था में ही उनकी वीरता का तेज सूर्य की किरणों की तरह चमकने लगा था ।

चेन्नमा जब विवाह योग्य हुई हो उनका विवाह कित्तूर के राजा मल्लसर्ज के साथ कर दिया गया। पूना से जो सड़क बैंगलौर जाती है उसी सड़क पर बेलगांव से पांच मील दूर कित्तूर पड़ता है । उन दिनों कित्तूर का राज्य बड़ा वैभवशाली था । राज्य में बहत्तर किले और तीन सौ अट्ठावन गांव थे । कित्तूर व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था । सोना, चांदी और हीरे-जवाहरातों का बाजार लगा करता था । दूर-दूर से व्यापारी माल खरीदने और बेचने के लिए आते थे । खेती भी बहुत अच्छी होती थी । प्रतिवर्ष धान इतना अधिक होता था कि खाने और खर्च करने पर भी प्रचुर मात्रा में बच जाता था ।

मल्लसर्ज बड़े वीर और स्वाभिमानी तथा बड़े प्रजापालक भी थे । वे गरीब-अमीर, छूत-अछूत सबको न्याय देते थे । उनके दरबार में भांति-भांति की कलाओं के पंडित रहा करते थे, जिन्हें जीवन निर्वाह के लिए राज की ओर से मासिक वृत्ति मिला करती थी ।

राजा ने दो विवाह किए थे । उनकी बड़ी रानी का नाम रूद्रम्मा था । राजा दोनों पत्नियों को समान आदर करते थे । दोनों रानियों ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया था, पर दुर्भाग्यवश अल्पावस्था में ही चेन्नमा के पुत्र का स्वर्गवास हो गया । राजा कित्तूर को एक वैभवशाली राज्य बनाना चाहते थे, पर उनकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी । पूना के पटवर्धन ने उनके साथ विश्वासघात करके उन्हें बंदी बना लिया । बंदी जीवन में ही उनकी सांसें टूट गईं ।

राजा की मृत्यु के पश्चात चेन्नमा ने रूद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रूद्रसर्ज को गोद ले लिया । वह उसमें मातृप्रेम केन्द्रित करके उसका पालन-पोषण करने लगीं । उनके पालन-पोषण और प्रेम में चेन्नमा अपने सारे दु:खों को भूल गईं । उन दिनों डलहौजी देशी रियासतों को अंग्रेजी राज्य में मिलाने में लगा हुआ था । वह बड़ा कूटनीतिज्ञ और चालाक था । वह किसी भी दत्तक पुत्र को वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं मानता था । इस तरह के राज्यों को बिना वारिस का मानकर हड़पता जा रहा था । कित्तूर राज्य की स्वतंत्रता उसे असह्य थी । उसका वैभव उसके लोभी मन को आकृष्ट कर रहा था । अत: उसने रानी चेन्नमा के दत्तक पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया ।

डलहौजी ने धारवाड़ के कलेक्टर को इस आशय की सूचना दे दी । कलेक्टर ने चेन्नमा को सूचित कर दिया । पर रानी चेन्नमा के ऊपर कलेक्टर थैकरे की सूचना का कुछ भी प्रभाव नही पड़ा । थैकरे ने चेन्नमा को बहुत से प्रलोभन दिए, धमकी भी दी, पर फिर भी चेन्नमा विचलित नहीं हुई । उन्होंने थैकरे को उत्तर दिया –''मैं कित्तूर की स्वतंत्रता को बेचने से रणभूमि में मर जाना अच्छा समझती हूं ।''

उन्हीं दिनों मल्लपा सेट्टी और वैंकटराव नामक दो देशद्रोही थैकरे से जा मिले । उन्होंने थैकरे से कहा – ''वे हर एक क्षेत्र में उसकी सहायता करेंगे ।'' थैकरे ने उन्हें वचन दिया कि वह कित्तूर का आधा राज्य उन्हें दे देगा । वैंकटराव ने उन्हें समझाया कि जब तक चेन्नमा जीवित है, अंग्रेजों की दाल कित्तूर में नहीं गलेगी । अत: चेन्नमा को या तो किसी प्रकार मार डाला जाए, या बंदी बनाकर कारागृह में डाल दिया जाए ।

चेन्नमा अंग्रेजों की चाल से परिचित थीं, पर वे रंचमात्र भी भयभीत नहीं हुईं । इसका कारण यह था कि उनके दरबार में गुरू सिद्दप्पा जैसे अनुभवी दीवान और बालण्ण, रायण्ण, गजवीर तथा चेन्नवासप्पा जैसे योद्धा थे । इनके रहते हुए उनके मन में भय पैदा होने का कोई कारण नहीं था।

चेन्नमा ने अपने दीवान से परामर्श करके थैकरे को सूचित किया – ''कित्तूर एक स्वतंत्र राज्य है । वह सदा स्वतंत्र ही रहेगा । यदि आवश्यकता हुई तो हम कित्तूर की स्वतंत्रता के लिए युद्ध भी करेंगे । हम गुलाम होने की अपेक्षा मृत्यु की गोद में सो जाना अच्छा समझते हैं।''

रानी के उत्तर से थैकरे क्रुद्ध हो उठा । वह युद्ध के लिए तैयारियां करने लगा । चेन्नमा भी बेखबर नहीं थीं । वे गांव-गांव घूमकर जनता को जगाने लगीं – ''अंग्रेज हमारे कित्तूर को अपने राज्य में मिलाना चाहते हैं । हमें अपना गुलाम बनाना चाहते हैं, पर हम ऐसा न होने देंगे । हम कित्तूर के लिए युद्ध करेंगे और अंतिम सांस तक युद्ध करेंगे।''

चेन्नमा के प्रयत्नों से कित्तूर जाग उठा । जनता ने धन और जन से चेन्नमा की बहुत बड़ी सहायता की, फलस्वरूप बहुत बड़ी सेना तैयार हो गई । तरह-तरह के हथियार भी इकट्ठे हो गए। उधर थैकरे तो पहले से ही तैयार बैठा था । उसे जब रानी की गतिविधियों का पता चला तो वह बहुत बड़ी सेना के साथ कित्तूर जा पहुंचा ।

23 सितम्बर, 1824 को थैकरे की सेना और रानी क़ी सेना में भयंकर युद्ध हुआ । रानी ने बड़ी कुशलता और वीरता के साथ अपनी सेना का संचालन किया । उन्होंने अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा – ''कन्नड़ माता के सपूतों, देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ते-लड़ते मर जाओ, पर देश को गुलाम मत होने दो । देश की माता अपनी रक्षा के लिए तुम्हें पुकार रही है।''

परिणाम यह हुआ कि चेन्नमा के सैनिक काल के अवतार बन गए । उन्होंने इतनी वीरता के साथ युद्ध किया कि थैकरे की सेना के पैर उखड़ गए । सेना भाग चली । स्वयं थैकरे ने भी धारवाड़ में जाकर सांस ली ।

पर थैकरे ने हारकर भी हार नहीं मानी । उसकी सहायता के लिए नई सेना आ पहुंची और उसने दूसरी बार पुनः कित्तूर पर आक्रमण किया । चेन्नमा ने दूसरे आक्रमण में भी अंग्रेजी फौज को पराजित किया ।

पर अंग्रेज अब कित्तूर छोड़ने वाले नहीं थे । उन्होंने तीसरी बार बहुत बड़ी सेना के साथ फिर कित्तूर पर आक्रमण किया । चेन्नमा ने तीसरी बार भी बड़े साहस के साथ मुकाबला किया, पर अब उनके सैनिकों की संख्या बहुत कम हो गई थी । उनके पास साधन भी अब नहीं रह गए थे। अतः तीसरी बार के युद्ध में उनकी पराजय हो गई । वे बंदिनी हो गईं । बंदिनी के रूप में ही चेन्नमा की मृत्यु हो गई । वे संसार से चली गईं, पर अपने पीछे शौर्य और देशभक्ति की ऐसी कहानी छोड़ गई हैं, जिससे भारत के लोग सदा प्रेरणा लेते रहेंगे ।

नारी ममता, करूणा, वात्सल्य से भरपूर
भरा है उसमें साहस, बुद्धिमत्ता, परिश्रम भरपूर ।

मेक इन इंडिया

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त लेख)

अनुभा बंसल
उप प्रबंधक (कार्मिक)

25 सितम्बर, 2014 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मेक इन इंडिया की शुरूआत की । मेक इन इंडिया से क्या अभिप्राय है पहले यह जानते हैं । जैसा की ऊपर बताया गया है कि मेक इन इंडिया एक मुहिम है । भारत वर्ष को एक विनिर्माण/मैनुफैक्चरिंग हब बनाने का जिससे विनिर्माण के क्षेत्रों में उन्नति हो । देश विकासशील से विकसित हो और रोजगार के अवसर बढाए जाएं ।

मेक इन इंडिया का लोगो एक गतिशील शेर है जो मशीनों के कलपुर्जो से बना दिखाई देता है । यह शेर अशोक चक्र से प्रेरित है जो यह दर्शाता है कि हम विकास और सफलता के पथ पर कार्यशील है, प्रगतिशील है । मेक इन इंडिया कैम्पेन में दुनिया भर के उद्योगपतियों ने हिस्सा लिया । लगभग 30 देशों के उद्योगपति इसमें शामिल होने आए । मोदी जी ने कहा देश में FDI लाओ और उन्होंने FDI का मतलब ही बदल दिया । फर्स्ट डेवलप इंडिया इसका सर्वप्रथम मुहिम यह है कि इंडिया को डेवलप करो । हाइवे के साथ आईवे भी बनाओ ।

मेक इन इंडिया के उद्देश्य : मेक इन इंडिया के कुछ उद्देश्य है जो निम्नलिखित हैं :-

1. देश में विनिर्माण के क्षेत्र में 16 से 25 प्रतिशत की वृद्धि करना ।
2. देश को मैनुफैक्चरिंग हब बनाना ।
3. कार्यशील श्रमशक्ति को बढ़ावा देना ।
4. अत्यधिक रोजगार उपलब्ध कराना ।
5. देश से विदेश पलायन रोकना ।
6. एफडीआई को बढ़ावा देना ।
7. तकनीकी ज्ञान और तकनीकी कार्यक्षमता को बढाना ।
8. विदेशी पूंजी और उद्योगपतियों को भारत में उद्योग लगाने और पूंजी लगाने को प्रोत्साहित करना ।
9. आपसी समन्वय और विश्वास पैदा करना ।
10. आसान पालिसी बनाना जिससे नये-नये रोजगार बनाये जा सके ।
11. बीजेपी सरकार ने हर साल लगभग 3 लाख युवाओं को तकनीकी ज्ञान कराने का उद्देश्य रखा है ।
12. घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देना जिससे हमारे लघु उद्योगों और हैंडीक्राफ्ट जैसे व्यवसाय आगे बढ़े ।

मेक इन इंडिया के अंतर्गत 125 करोड़ आबादी वाले भारत देश को पूर्ण प्रगतिशील एवं विकसित बनाने की मुहीम है । सब शिक्षित हों, कोई बेरोजगार न हो । गरीबी हटाओ । परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कि जब कोई अच्छी सोच आती है तो उसके साथ कुछ चुनौतियां भी लाती है ।

कुछ लोग उसे बेकार कह कर टिप्पणियां करते हैं । यह कुछ निम्नलिखित चुनौतियां जो हमारे मेक इन इंडिया के लिए खतरा हो सकती हैं ।

1. **समन्वय** – प्रदेशों और राज्यों में आपसी समन्वय की कमी है एक तरफ मोदी जी अमेरिका जाते हैं तो दूसरी तरफ बिहार के मुख्यमंत्री श्री मांझी जी लंदन जाते हैं । एक नेता/मंत्री कोई नीति बनाता है तो दूसरा उसे गलत बताता है । अगर इस तरह हम आपस में लड़ते रहेंगे तो देश को कौन बचाएगा । जनता ने देश की बागडोर भेड़ियों को चुनकर उनके हाथ में दे दी है । अतः आपसी समन्वय स्थापित करने बहुत आवश्यक है जोकि एक बहुत बड़ी चुनौती है ।
2. **भ्रष्टाचार** – भ्रष्टाचार अपनी जड़े फैला रहा है अगर हमें एफडीआई को बढ़ाना है तो भ्रष्टाचार को खत्म करना होगा । अपने लिए नहीं देश के लिए सोचना होगा । जब देश बढ़ेगा तो हम भी बढ़ेंगे । मैं नहीं हम को चुनना होगा ।
3. **इन्फ्रास्ट्रक्चर** – हमारा इन्फ्रास्ट्रक्चर ढांचा बहुत कमजोर है । हमारी सड़के, यातायात के साधन, एक जगह से दूसरी जगह की कनेक्टीविटी बहुत कमजोर है जो कि निवेश कर्त्ताओं को निवेश करने से रोकेगी ।
4. **टैक्स** – कितनी कम्पनियां टैक्स के चपेट में आ चुकी है । टेलीकाम सैक्टर इसका उदाहरण है । हमे अपना टैक्स भरने का तरीका और सरल तथा टैक्स स्ट्रक्चर और आसान करना होगा ।
5. **चीन** – चीन सबसे बड़ी चुनौती है जैसे ही हमने मेक इन इंडिया लॉच किया चीन ने मेक इन चाइना लॉच कर दिया । चीनी घुसपैठिये हमारी सीमा में प्रवेश कर हमारे देश की सम्पत्ति को क्षति पहुंचा गए । चीन ने पहले भी अपने सस्ते बैटरी वाले खिलौनों से हमारा बाजार खराब किया है । सेहत पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है । चीन सबसे बडी चुनौती है । चीन की अर्थव्यवस्था काफी बड़ी और इसका सैन्य बल भी बहुत मजबूत है । चीन इस समय अमेरिका तक की अर्थव्यवस्था को चुनौती दे रहा है । चीन के विदेश मंत्री और राष्ट्रपति ने इंडिया से शांतिवार्ता और मेक इन इंडिया मुहिम के लिए मोदी जी को बधाई दी है । चीन की चुनौती है तो सामना भी सब मिल कर करेंगे चीन की वस्तुओं का कम से कम इस्तेमाल करके ।
6. **विश्वास की कमी** - पूंजीपतियों को हमारे महा निवेश करने में डर रहता है । एक तो यहां की क्रय शक्ति कम है और हमारी पालिसी भी बाकी देशों के मुताबित थोड़ी मुश्किल है जैसे नोकिया का चेन्नई का प्लांट बंद हुआ वैसे ही कहीं और न हो इसका भी डर रहता है । इसी कारण हमारे खुद के उद्योगपति यहां निवेश करने में डरते हैं और विदेशी यहां निवेश करना

चाहते हैं कि वो फिर से हम पर कब्जा करें । तो हमें ऐसी पॉलिसी बनानी होगी जिससे निवेश भी हो विश्वास भी और फायदे भी ।

मेक इन इंडिया के फायदे – हर चीज के दो पहलू होते हैं । हमने चुनौती तो देख ली अब इसके क्या फायदे हैं ये निम्नलिखित हैं :-

1. सरकार ने 25 सैक्टरों को चुना है जिसमें रोजगार और उद्योग और बढ़ाएं जाएंगे । बंदरगाह, फार्मेसी, रसायन, आईटी, इलैक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्ट्रीकुलर इत्यादि ।
2. तकनीक ज्ञान और तकनीकी श्रमशक्ति बढ़ाना ।
3. इसके फायदे तो शुरू भी हो गए हैं । फाक्सकान ने महाराष्ट्र सरकार के साथ 4 बिलियन डालर की डील की है और एमओयू साइन किया है । जनरल मोटर्स ने भी 1 बिलियन डालर निवेश करने का प्रस्ताव दिया है ।
4. सोनी कम्पनी के डायरेक्टर ने 2004 में हरियाणा में अपना प्लांट बंद होने के बाद भी पुनः यहां पर निवेश करने की बात की है । सोनी ने हाल ही में बेवो टीवी लेड लॉंच किया है । उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि यह कोशिश अपने रंग दिखा रही है ।
5. मेक इन इंडिया से हाइवे के साथ आईवे पर भी जोर दिया गया है ।
6. ग्राहकों की क्रय शक्ति बढ़ेगी ।
7. विनिर्माण क्षेत्र में 16 से 25 प्रतिशत तक वृद्धि होगी ।
8. रूपये की कीमत बढेगी ।
9. भ्रष्टाचार में कमी आएगी ।
10. गुड गर्वनेंस बनेगी ।
11. हमारी अर्थव्यवस्था इस समय काफी अच्छी है और इससे और अधिक अच्छी हो जाएगी ।
12. उद्योगों के हिसाब से जनशक्ति का भी उपयोग होगा ।
13. घरेलू उत्पादों और हैंडीक्राफ्ट को प्रोत्साहन मिलेगा ।
14. सरकार ने एक आसान लाइसेंस उपलब्ध कराने की भी कोशिश की है ।
15. हम खुद बनायें और उन्हीं वस्तुओं का प्रयोग करेंगे ।
16. चीन के मुकाबले हमारी श्रमशक्ति सस्ती है जिससे लागत भी कम होगी ।
17. भारत एक ऐसा देश है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है । अगर हम अपने संसाधनों का पूरा उपयोग करेंगे तो हमारी उद्योगिकता बहुत बढ़ जाएगी ।
18. प्रकृति का पूरा बचाव होगा ।

मेक इन इंडिया एक स्लोगन नहीं एक ऐसी सोच है जो अगर कार्यान्वित हो गयी तो 2020 तक हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में होगा । हमें अपना गांव, घर और देश छोड़कर नहीं जाना है तो मेक इन इंडिया सोच को अपनाओं भारत अपने आप बढ़ेगा ।

"बोलती तस्वीर"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त लेख)

ताजपाल
वरि.अभियंता
अफगानिस्तान प्रभाग

बाढ़ की समस्या : हमारे देश में आजकल बाढ़ की समस्या बहुत बढ़ गई है । इससे लगभग सभी प्रांतों को नुकसान हो चुका है । इस चित्र में भी भारत कं उत्तरी राज्य में हुए विनाश को दर्शाता है । लम्बे अरसे से इस प्राकृतिक आपदा को रोकने के लिए अनेक उपायों को अपनाया गया है परन्तु इसको पूर्ण रूप से रोक पाने में हम कामयाब नहीं हो पाए हैं । लाखों जिन्दगियां बर्बाद हो जाती हैं । अरबों का माल नष्ट हो जाता है ।

बाढ़ का आना मतलब किसी नदी या नाले में जल स्तर का खतरे के चिन्ह को लांधना होता है । अचानक ही आने वाले अत्यधिक पानी से आस-पास के क्षेत्र तबाह हो जाते हैं । बाढ़ आने से इमारतें धवस्त हो जाती हैं, सड़कें टूट जाती हैं और सबसे मूल्यवान मानव जीवन भी अस्त-व्यस्त हो जाता है ।

बाढ़ के कारण : इस आपदा के कई कारण हो सकते हैं जैसे मूसलाधार वर्षा, बादल फटना, बर्फ पिघलना आदि। कई बार किसी बांध आदि के टूटने से भी बाढ़ का सामना करना पड़ता है ।

उपाय : आज मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत उन्नति कर ली है और तकनीकी मदद से बाढ़ को रोका जा सकता है या फिर लोगों को समय पर सूचित करके बचाया जा सकता है । कुछ उपाय निम्नलिखित हैं :-

1. बांधों का निर्माण करके बाढ़ के खतरे को कम किया जा सकता है ।
2. नहरों का निर्माण करके नदियों के अत्यधिक पानी को जल रहित क्षेत्रों में पहुंचाया जा सकता है।
3. मौसम विभाग इस कार्य में सक्षम होता है । वर्षा आदि की पूर्ण जानकारी से बाढ़ पीड़ित प्रांतों में आवश्यक सूचना और उचित समाधान किए जा सकते हैं ।
4. लोगों को जागरूक करके भी इस विषय में काफी मदद की जा सकती है । जैसे बाढ़ के खतरे वाले क्षेत्रों में आवा जाई कम कर दी जाए जिससे अगर बाढ आ भी जाए तो नुकसान से बचा जा सके ।

भारत में बाढ़ पीडित क्षेत्र : हमारे देश में ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां रहने वाले लोगों को इस आपदा का सामना प्रति वर्ष करना पड़ता है । बिहार में कोसी नदी में हुई तबाही को सैकड़ों बार देखा है। एक बहुत बड़ा क्षेत्र इस बाढ़ की चपेट में आ जाता है फिर भी इम इससे बचने में पूर्ण रूप से समर्थ नहीं हो पा रहे हैं ।

पिछले वर्षों में उत्तरी भारत में केदारनाथ जैसे पवित्र स्थल पर हुई तबाही को कौन भूल पाया है। इसकी सूचना उचित समय पर नहीं पहुंच पाई और लाखों लोगों को इसका नुकसान उठाना पड़ा। **ये चित्र भी उसी विनाशक तबाही को बयां करता है जिसमें बाढ़ के पानी से ध्वस्त होते घर दिखाए गए हैं ।**

इसी प्रकार जम्मू और कश्मीर में भी इस आपदा ने लोगों के जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया। अगर हमें आने वाले वर्षों में इसी प्रकार की आपदाओं से बचना है तो उपरोक्त हल लागू करने होंगे और लोगों को जागरूकता फैलानी होगी ताकि किसी प्रकार के जान माल का नुकसान न हो। मैं आशा करता हूं कि हम इस मुश्किल का हल कर सकेंगे ।

''जय हिन्द''

चाहें आप जितने भी पवित्र शब्द पढ़ लें या बोल लें, वो आपका क्या भला करेंगे जब तक आप उन्हें उपयोग में नहीं लाते ।

कैसे याद करें ?

साभार : मानव जगत के रोचक रहस्य

किसी बात को सीखने तथा अनुभव करने के बाद उसको याद्दाश्त द्वारा ही स्थिर रखा जा सकता है । अनुभव और सीखी हुई बातों को मस्तिष्क द्वारा स्थिर रखने की क्षमता को ही याद्दाश्त कहते हैं, मनुष्य के जीवन में जो भी छोटी-से-छोटी या बड़ी-से-बड़ी घटना घटती है, उसका एक प्रकार का लेखा-जोखा मस्तिष्क में दर्ज हो जाता है । मस्तिष्क में घटनाओं का लेखा-जोखा धीरे-धीरे धुंधला होता रहता है, इसी को हम भूलना कहते हैं ।

अतः यदि किसी अनुभव और सीखी हुई बात को बार-बार दोहराया जाए तो बार-बार उसका मस्तिष्क में प्रभाव होता रहेगा और वे अनुभव और सीखी हुई चीजें हमें याद रहेंगी ।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति चार प्रकार से सीखता या याद करता है – पहला प्रकार क्लासिकल कंडीशनिंग का है, इस सम्बन्ध में सन् 1900 में इवाज पावलोव के एक कुत्ते पर प्रयोग किए थे, उसने एक कुत्ते को कुछ खाने को दिया और साथ ही एक घण्टी बजा दी । खाना देख कर कुत्ते के मुंह में लार आ गई पावलोव ने इसे बिना सीखी हुई क्रिया कहा लेकिन कुछ दिनों के बाद खाने को बिना देखे केवल घण्टी की आवाज सुन कर ही कुत्ते के मुंह में लार आने लगी इसे सीखी हुई क्रिया कहा गया ।

सीखने के दूसरे प्रकार को स्वयं कार्य करके सीखना कहते हैं । प्रायः व्यक्ति स्वयं कोई कार्य या क्रिया करता है और उस क्रिया के कारण जो कुछ घटित होता है, उससे वह सीखता है । तीसरे प्रकार का सीखना होता है, जिसमें हम किसी विशेष कौशल के कार्य को सीखते हैं । इसमें पहले सरल-सरल बातें सीखी जाती हैं और बाद में कठिन । इसके अन्तर्गत टाइप करना जैसे कौशल आते हैं । टाइपिंग सीखने में हम पहले एक-एक अक्षर टाइप करना सीखते हैं, फिर क्रमशः शब्दों और वाक्यों को टाइप करना ।

चौथे प्रकार का सीखना किसी समस्या को हल करने की विधि सीखना है इसमें हम यह सीखते हैं कि समस्या के भिन्न-भिन्न भाग एक दूसरे के साथ कैसे संगत करते या बैठते हैं । इसका सरल उदाहरण एक बच्चे द्वारा मेज पर बैठने का प्रयत्न करना है । बच्चा कुर्सी पर चढ़ने के लिए स्टूल पर चढ़ता है फिर कुर्सी पर चढ़ कर मेज पर बैठ जाता है ।

मस्तिष्क की याद्दाश्त के विषय में अब तक दो सिद्धान्त दिए गए हैं । एक सिद्धान्त के अनुसार याद्दाश्त एक गतिशील प्रक्रिया है, जब कोई भी चीज हम सीखते हैं या अनुभव करते हैं तो उसके फलस्वरूप हमारे शरीर के तन्तुओं के आवेग पैदा होते हैं। ये तन्तु आवेग हमारे मस्तिष्क में

उपस्थित न्यूरांन्स पर अपना प्रभाव छोड़ देते हैं और इस प्रकार सीखे हुए अनुभवों का लेखा-जोखा हो जाता है । इस सिद्धान्त को काफी मान्यता दी गई है । दूसरे सिद्धान्त के अनुसार अनुभवों और सीखने के फलस्वरूप हुए संवेदन से मस्तिष्क में कुछ स्थाई परिवर्तन हो जाते हैं जो याद्दाश्त के रूप में रहते हैं । कुछ जीवशास्त्रियों के अनुसार मस्तिष्क उपस्थित राइबो न्यूक्लिक एसिड आर.एन.ए. में यादों का लेखा-जोखा होता रहता है । यह देखा गया है कि न्यूरांन्स में आर.एन.ए. की मात्रा 3 साल की उम्र से 40 साल की उम्र तक बढ़ती है । इन वर्षो में मनुष्य की याद्दाश्त भी बढ़ती है, 40 से 55 या 60 वर्ष की उम्र तक न्यूरांन्स में आर.एन.ए. की मात्रा लगभग स्थिर रहती है, इसलिए इस उम्र में लगभग याद्दाश्त भी स्थिर रहती है । 60 वर्ष के बाद आर.एन.ए. की मात्रा कम होने लगती है और याद्दाश्त भी कम होने लगती है ।

सीखी हुई बातों या अनुभवों को याद के रूप में स्थिर रखने का केवल एक ही प्रभावशाली तरीका है, वह है चीजों को बार-बार दोहराना, याद्दाश्त को प्रतिबिम्बों द्वारा कायम रखने का दूसरा तरीका भी मनोवैज्ञानिकों ने बताया है, यदि किसी घटना या वस्तु की मस्तिष्क में एक तस्वीर बना ली जाए, तो वह चीज बहुत दिनों तक याद रहती है । कुछ बातें सुनने से भी याद रहती हैं, जैसे कई गीत एक या दो बार सुनने से याद हो जाते हैं ।

स्मरण शक्ति अथवा याद्दाश्त बढ़ाने के कुछ उपाय अवश्य ध्यान में रखें । याद्दाश्त बढ़ाने के लिए इच्छा होना, याद की जाने वाली बात का रूचिकर होना, व्यक्ति में उसकी समझ होना, नई बात को पुरानी सीखी हुई बात के साथ जोड़ लेना, मन में उसका चित्र बना लेना और बार-बार उसे दोहराना ।

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या मसौदा हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे । कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं । विशिष्ट दस्तावेज़ विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं, वह विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा । केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट हैं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाए ।

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

कविता – नारी

निम्मी भट्ट
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

नारी तुम्ही हो श्रृदा और
तुम्हीं हो ममता
किन शब्दों में दूं परिभाषा
तुम ही तो हो सबकी आशा ।

खुशियों का संसार हो तुम
प्रेम का आधार हो तुम
घर आंगन को रोशन करती
सूरज की दमकार हो तुम
किन शब्दों में दूं परिभाषा
तुम ही तो हो सबकी आशा ।

तुम ही ममता का सम्मान
तुम ही संस्कारों की जान
तुम ही स्नेह, प्यार, त्याग की
इकलौती पहचान
किन शब्दों में दूं परिभाषा
तुम ही तो हो सबकी आशा ।

रूप सरस्वती का तुम हो
स्वरूप लक्ष्मी का तुम हो
बढ़ जाए जो अत्याचार
तो तुम्हीं हो दुर्गा काली अवतार
किन शब्दों में दूं परिभाषा
तुम ही तो हो सबकी आशा ।

नारी तेरे रूप अनेक
कभी कोमल फूल गुलाब हो तुम
कभी शक्ति का अवतार हो तुम
ईश्वर का चमत्कार हो तुम
किन शब्दों में दूं परिभाषा
तुम ही तो हो सबकी आशा ।

संस्कार

के.एन.द्विवेदी
आरेखण अधिकारी

हमारा समाज पारिवारिक दृष्टि से संस्कारों की बुनियाद पर बना हुआ है । मानव परिवार की ईकाई है और परिवार समाज की ईकाई है । हमें जो भी शिक्षा मिलती है वह परिवार और विद्यालयों से मिलती है । सोलह वर्ष तक की उमर इंसान को जैसा भी ढालो वह उसी का रूप बना लेता है क्योंकि वो उम्र एक कच्चे घड़े की तरह होती है उसके मन में जो भी संस्कार समावेशित हो जाते हैं वो आगे चल कर उसका अपना अस्तित्व बना लेते हैं । एक श्लोक में भी लिखा है :-

लाडयेत पंच वर्षाणि, दस वर्षाणि ताड़येत् ।
पोषयेत् षोड़स वर्षाणि, पिता पुत्र समागतः ।।

अर्थात् पांच वर्ष तक बच्चों को लाड़-प्यार करो । दस वर्ष तक बच्चे को भले-बुरे की शिक्षा दो, सही और गलत की शिक्षा दो । सोलह साल तक उसका खान-पान और शरीर का ध्यान रखो उसके बाद पिता और पुत्र बराबर हो जाते हैं ।

अब जो सामाजिक जीवन की जिम्मेदारियां हैं उनमें सबसे अहम हे बच्चों की सोलह साल के उपरांत की दिनचर्या । अगर अभिभावक अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी से निभा रहे हैं तो वो कभी भी दायें बायें नहीं हो सकते और वो अच्छे समाज के निर्माण में अपना योगदान भविष्य के लिए निर्धारित कर लेगें, क्योंकि हमारे बच्चे ही हमारे समाज और देश के भविष्य के कर्णधार हैं । इसलिए उन पर पारिवारिक अंकुश जरूर होना चाहिए । समाज और देश के प्रति उनके योगदान की भी बातें उनको सिखाई जानी चाहिए । आज समय के बदलते परिवेश में भले ही हम कितनी दूर निकल गए हों लेकिन जो आधारभूत आदर्श हमें पूर्व बुद्धिजीवियों द्वारा मिले हैं उनका सम्मान और जीवन में उनको अपनाना हमारा कर्त्तव्य बनता है । समाज में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का पाठ अवश्य पढ़ाना चाहिए । मैथलीशरण गुप्त की एक कविता का अंश उल्लेखित कर रहा हूं :-

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही ।
विरूद्धवाद बुद्ध का दया प्रवाह में बहा,
विनीत लोक वर्ग क्या न सामने झुका रहा ।
अहा वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे ।।

इसका निष्कर्ष ही यह है कि सहानुभूति और परोपकार दोनों बच्चों के संस्कारों में घुली होनी चाहिए । मनुष्य के जीवन में और एक नियंत्रण वाली बात का उल्लेख करता हूं कि यदि हम काया, वाक और चित पर नियंत्रण कर लें तो हम स्वयं को हर दुख से मुक्त कर सकते हैं ।

शरीर के खान-पान पर नियंत्रण, वाणी पर नियंत्रण और मन को वश में कर लेना फिर हम किसी भी प्रकार की परेशानियों से बच सकते हैं। वर्तमान में जिस प्रकार सामाजिक गतिविधियों में छोटी-छोटी समस्याएं भविष्य के लिए अनुपयुक्त हैं वे सब कहीं न कहीं हमारे द्वारा दिए गए संस्कारों का ही परिणाम हैं। इसलिए अच्छे संस्कार ही सही और सच्चे समाज का निर्माण कर सकते हैं। आजकल अनावश्यक रूप से तनाव भी जीवन में एक विपरीत हालात पैदा कर रहा है। तनाव भरी जिन्दगी भी खुशियों को मिटा देती हैं। हम उम्मीद से अधिक अपेक्षा करते हैं जो मानसिकता को बढ़ावा देता है। भागदौड़ भरी जिन्दगी में हम स्वयं अपना स्वरूप खो देते हैं। जीवन के उन पहलुओं पर ध्यान नहीं देते जो आगे चलकर सहायक होते हैं। इन सभी हालातों से बचने के लिए हमें अपनी सभ्यता, संस्कृति और पारम्परिक एकरूपता को अंगीकृत करना होगा, स्वयं का आकलन करना होगा। पश्चिमी सभ्यता के चलते जिस प्रकार शैक्षणिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन हो रहा है वो कहीं न कहीं एक दिन हमारे मूल स्वरूप से दूर हो सकता है। यद्यपि शिक्षा का विकास सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से जरूरी है किन्तु उसमें आदर्शभाव होना जरूरी है। क्रमशः शेष अगले अंक में ।

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । 'क' क्षेत्र में स्थित संलग्न अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे। 'ख' और 'ग' क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद उनके साथ भेजा जाएगा । परन्तु यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

- **राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय**

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस – 8 मार्च

निम्मी भट्ट,
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

8 मार्च यानि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरूआत 1900 के आरंभ में हुई थी। वर्ष 1908 में न्यूयार्क की एक कपड़ा मिल में काम करने वाली करीब 15 हजार महिलाओं ने काम के घंटे कम करने, बेहतर तनख्वाह और वोट का अधिकार देने के लिए प्रदर्शन किया था। इसी क्रम में 1909 में अमेरिका की ही सोशलिस्ट पार्टी ने पहली बार "नेशनल वुमन-डे" मनाया था। वर्ष 1910 में डेनमार्क के कोपेनहेगन में कामकाजी महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का फैसला किया गया और 1911 में पहली बार 19 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इसे सशक्तिकरण का रूप देने हेतु ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में लाखों महिलाओं ने रैलियों में हिस्सा लिया। बाद में वर्ष 1913 में महिला दिवस की तारीख 8 मार्च कर दी गई। तब से हर 8 मार्च को विश्व भर में महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महिलाएं विश्वपटल पर अपनी बुद्धिमता, दूरदर्शिता, अथक परिश्रम व अदभुत साहस के साथ अपनी पहचान बनाने में सफल हुई हैं । उसमें अताह शक्ति व क्षमताएं विद्यमान हैं। युग निर्माण में महिलाओं ने वात्सल्य, करूणा, प्रेम, मानवीय संवेदना जैसे भावों से परिपूर्ण होकर अपना योगदान दिया है । नारी ईश्वर की एक ऐसी कृति है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । उसमें मातृत्व का गुण है । वह पुरूष की प्रतिद्वन्दी नहीं अपितु पुरूष की पूरक व सहयोगी है । ईश्वर ने नारी को सरल, सहज व कोमल बनाया है और हमें उसे उसी रूप में बनाए रखना है ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष हमें विश्वस्तर पर महिलाओं की उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है । महिलाओं की स्थिति में कुछ दशकों में काफी बदलाव आए हैं । आज आधुनिक युग में महिलाएं दोहरी भूमिका निभा रही है । घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी बखूबी निभाने के साथ-साथ महिलाएं व्यावसायिक दुनिया में भी सफलता प्राप्त कर रही हैं । आज महिलाएं सशक्तिकरण की राह पर हैं और अपने पक्ष में मजबूत दावेदारी दिखा रही हैं ।

भारत में महिलाओं को सशक्त करने की शुरूआत राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन, ईश्वर चन्द विद्यासागर एवं विवेकानंद जैसे महापुरूषों ने बहुत पहले ही कर दी थी । इस क्रम को अन्य नेताओं ने आगे बढ़ाया । इससे नारी में संघर्ष क्षमता का प्रारंभ शुरू हुआ और वह निरंतर आगे बढ़ती रही ।

नई और आधुनिक शिक्षा ने नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने का अवसर दिया है । इस शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार की आज देश को विशेष जरूरत है ताकि ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाएं भी लाभान्वित हो सके । वे भी अपने अधिकारों के बारे में जान सकें और ज्यादा से ज्यादा जागरूक हो सके । प्राचीन काल से चली आ रही परंपराओं पर यदि हम नजर डालें तो पाएंगे कि नारी का हर नव निर्माण में पूर्ण सहयोग रहा ।

विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के अभूतपूर्व योगदान का संक्षिप्त में परिचय जानते हुए आपको भी गर्व होगा । गार्गी, मैत्रेयी, अरुंधति जैसी महान नारियों का आर्यावर्त जैसे महान राष्ट्र के निर्माण में निश्चित रूप से योगदान रहा है । पौराणिक काल में कैकयी ने सारथी बनकर रथ के पहिये के टूट जाने पर अपने हाथ को धूरी की जगह रखकर महाराज दशरथ को युद्ध जीताया । रजिया सुल्तान, झांसी की रानी, चांद बीबी, अहिल्या बाई जैसे अनेकों नामों से लेकर अरूणा आसफ अली, सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी, आजाद हिंद फौज में एक पूरी पलटन का नेतृत्व करने वाली लक्ष्मी एवं क्रांतिकारियों का सहयोग देने वाली नारियों की एक लंबी सूची है जिन्होंने देश निर्माण के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया ।

व्यावहारिक जगत के विभिन्न क्षेत्रों में भी महिलाएं अनेकों कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं । डा0 टेसी थामस जिसे लोग 'मिसाइल वूमन' या 'अग्नि पुत्री' का खिताब देते हैं । इन्होंने देश की मिसाइल सुरक्षा की कड़ी में 5000 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण कर विश्व मानचित्र पर भारत का नाम रोशन कर दिया । डा0 किरन बेदी भारत पुलिस सेवा की प्रथम वरिष्ठ महिला अधिकारी, विख्यात धावक पी.टी.ऊषा को 'पटयोली एक्सप्रैस' उपनाम दिया गया। विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की पांच बार विजेता रही मेरी कॉम, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा जैसी कई महिलाएं खेल जगत की गौरवपूर्ण पहचान रही हैं । बछेन्द्र पाल दुनिया की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला हैं।

विश्वविख्यात रसायनशास्त्री व भौतिकीविद् मेरी क्यूरी जिन्होंने रेडियम की खोज की । इस वैज्ञानिक मां की दोनों बेटियों बड़ी बेटी आइरीन को रसायन विज्ञान व छोटी बेटी ईव को शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजा गया । साहित्य जगत को महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि जैसी अनेक महिलाओं ने असामान्य परिस्थितियों में भी उत्कृष्ट रचनाओं से सुशोभित किया है । अमेरिका में जन्मी टोनी मोरीसन भी विश्व साहित्य का जाना-माना नाम है । कई महिलाओं मदर टेरेसा, भागिनी निवेदिता व रामाबाई आदि ने वात्सल्य और करूणा की भावना से ओत-प्रोत सामाजिक क्षेत्र की भूमिका को बहुत ही आत्मिय तरीके से निभाया ।

सुरेखा यादव प्रथम महिला रेलगाड़ी ड्राइवर तो अंतरिक्ष पटल की खास पहचान भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स् और कल्पना चावला, सिनेमा जगत की लाइट, कैमरा, एक्शन बोलती महिलाएं नए रंग भरती अपने कदमों के निशान छोड़ रही हैं । नैना लाल किदवई, इंद्रा नूई,

चन्द्रा कोचर, किरण मजूमदार, स्वाति पिरामल, मजूमदार शॉ, चित्रा रामाकृष्णा आदि अनेक महिलाएं आज वाणिज्य जगत में कम्पनी की सीईओ बनकर सफलतापूर्वक अपने कार्यों को अंजाम दे रही हैं । विश्व के राजनीतिक पटल पर भी अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी सर्वोच्च पद पर महिलाएं विद्यमान हैं ।

नई व आधुनिक शिक्षा, विचारों व देश की स्वतंत्रता ने नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने का मौका दिया है । ऐसे तमाम उदाहरण है जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं ने हर दौर में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है । आज माता-पिता बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं रखते और स्वयं बेटियों को ऊंचे मकाम पर ले जाने के लिए पूरा सहयोग करते हैं । यह समाज में आया एक बदलाव ही है । आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां महिला का वर्चस्व न हो । नारी की आज ऐसी साहसिक यात्रा, अपने खुले आकाश के साथ अपनी स्वतंत्रता की सांस ले रही है । आओ, महिला दिवस पर हम अपने कदमों को सही दिशा देकर महिला होने पर गर्व करें और महिला दिवस का मान बढ़ाएं, सम्मान बढ़ाए । अंत में......

अब नारी में शक्ति सारी, आगे बढ़ती जाएगी ।
साहस और परिश्रम के बल पर, अपना परचम लहराएगी ।।

नारी तुम प्रेम हो

चन्द्रकान्ता शर्मा
कार्यालय प्रबंधक

नारी तुम प्रेम हो,
आस्था हो, विश्वास हो
टूटी हुई उम्मीदों की,
एक मात्र आस हो,
हर जहां का
तुम्ही आधार हो
नफरत की दुनिया में
तुम्हीं मात्र प्यार हों
उठो अपने अस्तित्व को संभालो
केवल एक दिन ही नहीं
हर दिन नारी दिवस मना लो

कार्मिक प्रभाग

नई भर्ती – वाप्कोस परिवार में आपका हार्दिक स्वागत है

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
1.	राजा कुमार	कनिष्ठ सहायक
2.	पूजा शुक्ला	कनिष्ठ सहायक
3.	मोहित तिवारी	कनिष्ठ सहायक
4.	कृष्णा कान्थ	कनिष्ठ सहायक
5.	हर्ष गुप्ता	कनिष्ठ सहायक
6.	रिन्कू	कनिष्ठ सहायक
7.	विनोद कुमार	सहायक प्रबंधक
8.	के.अर्जुन	अभियंता
9.	आशीष दयाल	अभियंता प्रशिक्षु
10.	सौरभ कुमार	अभियंता प्रशिक्षु
11.	एस.प्रसाद	अभियंता प्रशिक्षु
12.	एस.प्रकाश	अभियंता प्रशिक्षु
13.	पी.रंजन गुप्ता	अभियंता प्रशिक्षु
14.	गुरचेतन सिंह	अभियंता प्रशिक्षु
15.	एस.सिंघल	अभियंता प्रशिक्षु
16.	कृष्ण कुमार यादव	अभियंता प्रशिक्षु
17.	नितिन जैसवाल	अभियंता प्रशिक्षु
18.	एस.क्षत्रपति लिम्जे	अभियंता प्रशिक्षु
19.	अमन गौतम	अभियंता प्रशिक्षु
20.	बी.एम.राजू	अभियंता प्रशिक्षु
21.	अतुल चौरसिया	अभियंता प्रशिक्षु
22.	विन्ती पंवार	अभियंता प्रशिक्षु
23.	गिरीश शर्मा	अभियंता प्रशिक्षु
24.	आदित्य कंवर	अभियंता प्रशिक्षु
25.	नेहा अर्माया	अभियंता प्रशिक्षु
26.	अमित गुलेरिया	अभियंता प्रशिक्षु

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
27.	सुमित मान	अभियंता प्रशिक्षु
28.	आदित्य डी.एम.	अभियंता प्रशिक्षु
29.	मयंक खट्टर	अभियंता प्रशिक्षु
30.	विजय कुमार	अभियंता प्रशिक्षु
31.	संदीप यमला	अभियंता प्रशिक्षु
32.	किस्मत सिंह	अभियंता प्रशिक्षु
33.	सौरभ राय	अभियंता प्रशिक्षु
34.	दीपक बी.	अभियंता प्रशिक्षु
35.	आदित्य पी.	अभियंता प्रशिक्षु
36.	राहुल भट्ट	अभियंता प्रशिक्षु
37.	रक्षित के.	अभियंता प्रशिक्षु
38.	रोहित वर्मा	अभियंता प्रशिक्षु
39.	प्रिंस	अभियंता प्रशिक्षु
40.	ई.रितेश पेट्रो	अभियंता प्रशिक्षु
41.	विभू गोयल	अभियंता प्रशिक्षु
42.	मयंक गुप्ता	अभियंता प्रशिक्षु
43.	सागर शर्मा	अभियंता प्रशिक्षु
44.	सौरभ कुमार मंगल	अभियंता प्रशिक्षु
45.	सुधान्शु गोयल	अभियंता प्रशिक्षु
46.	शिवनाथ मेहरा	अभियंता प्रशिक्षु
47.	संगीत तापादार	अभियंता प्रशिक्षु

सेवानिवृत्ति – वाप्कोस परिवार अपने निम्न कार्मिकों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है :

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
1.	जसपाल कौर	उप मुख्य प्रबंधक
2.	यू.के.जैन	वरि.ड्राइंग अधिकारी

(एस.विजय राव)

वरि.महा प्रबंधक (का./प्र. व वि.)

भारत के प्रथम राष्ट्रपति - डा0 राजेन्द्र प्रसाद

निम्मी भट्ट
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

स्वतंत्र भारत को डा0 राजेन्द्र प्रसाद के रूप में पहला राष्ट्रपति प्राप्त हुआ जब भारत को संविधान के रूप में 26 जनवरी, 1950 को एक गणतंत्र राज्य का दर्जा मिला ।

डा0 राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार के एक छोटे से गांव जीरादेई में 3 दिसम्बर, 1884 को हुआ। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था । इनका एक बड़ा संयुक्त परिवार था जिसमें पारिवारिक सदस्यों के आपसी संबंध बेहद मधुर और मजबूत थे। उस समय धर्म के नाम पर भेदवाव जैसी व्यवस्थाएं समाज से पूर्ण रूप में विलुप्त थीं । राजेन्द्र जी के कई मित्र मुसलमान थे जो आपस में मिलकर होली खेलते थे और हिन्दू मुहर्रम पर ताजिए निकालते थे । सब आपस में बड़े ही प्रेमभाव से रहते थे। धर्म जैसी कोई चीज आपसी भाईचारे में आड़े नहीं आती थी । सब मिलजुल कर रहते थे । अपने संयुक्त परिवार में राजेन्द्र प्रसाद सबसे छोटे थे और इसी कारण उनका बचपन बड़े ही दुलार से बीता था । वह दृढ़ निश्चयी व उदार दृष्टिकोण वाले व्यक्ति थे । वह थोडे रूढिवादी भी थे । डा0 राजेन्द्र प्रसाद का जन्म उस काल में हुआ जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद पूरी तरह से अपने पांव पसार चुका था । हर क्षेत्र में जैसे खान-पान, कपड़े आदि में ब्रिटिश छाप महसूस की जा सकती थी । पर तब भी राजेन्द्र प्रसाद धोती कुर्ता व सर पर टोपी पहनते थे । वह एक विद्वान व प्रतिभाशाली पुरूष थे ।

राजेन्द्र जी का पढ़ाई में बचपन से ही रूझान था । उस समय शिक्षा का प्रारंभ फारसी भाषा से कराने का भी एक रिवाज था । इसलिए उन्हें व उनके चचेरे भाईयों को पढ़ाने एक मौलवी आते थे । राजेन्द्र जी ने अपने लगातार खराब रहने वाले स्वास्थ्य का असर अपनी पढ़ाई पर नहीं पड़ने दिया । उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उन्हें 30/- रू0 की छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई । जीरादेई गांव के किसी व्यक्ति ने पहली बार कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में सफलता प्राप्त की थी जो नि:संदेह राजेन्द्र जी, उनके परिवार व गांव के लिए गर्व की बात थी । उन्होंने सन् 1902 में कलकत्ता प्रेसिडेंसी कालेज में प्रवेश लिया तथा कानून में मास्टर डिग्री में विशिष्टता पाने के लिए सन् 1915 में राजेन्द्र प्रसाद को गोल्ड मैडल मिला । उसके बाद उन्होंने कानून में डाक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की ।

स्वदेशी आन्दोलन के साथ उनका सफर तभी आरंभ हो गया जब गांधी जी से प्रेरित होकर उन्होंने विदेशी कपड़ों की आहुति दे दी । सन् 1905 में गोपाल कृष्ण गोखले ने सर्वेंटस आफ इंडिया सोसायटी की शुरूआत की और राजेन्द्र प्रसाद को इसकी सदस्यता लेने के लिए अत्यधिक प्रेरित किया लेकिन परिवार वालों के विरुद्ध वह कोई कार्य नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने

यह प्रस्ताव ठुकरा दिया । राजेन्द्र प्रसाद द्वारा कानून की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात कई वकीलों, लेखकों व विद्वानों से मिले । वह अब तक भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बन चुके थे और एक समर्पित कार्यकर्त्ता की छवि से परिपूर्ण जल्दी ही गांधीजी के सम्पर्क में आ गए थे। राजेन्द्र जी चम्पारन आंदोलन के दौरान गांधीजी के वफादार साथी बन गए और गांधीजी के प्रभाव में आने के बाद उन्होंने अपनी पुरानी और रूढ़िवादी विचारधारा का त्याग कर एक नई ऊर्जा व जोश के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी का आगाज किया । वह एक से अधिक बार राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने ।

भारत को स्वतंत्रता 15 अगस्त, 1947 को प्राप्त हुई परन्तु संविधान सभा का गठन उससे कुछ समय पहले कर लिया गया था, जिसके अध्यक्ष डा0 राजेन्द्र प्रसाद थे । और फिर, 26 जनवरी, 1950 को भारत गणतंत्र बना और देश को मिला पहला राष्ट्रपति – डा0 राजेन्द्र प्रसाद ।

प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद की विशिष्ट उपलब्धियां :-

- डा0 राजेन्द्र प्रसाद भारत के एकमात्र राष्ट्रपति थे, जिन्होंने लगातार राष्ट्रपति का पद दो बार प्राप्त किया ।
- डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए कई देशों की यात्राएं सदभावना के उद्देश्य से की ।
- डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने आण्विक युग में शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया ।
- डा0 राजेन्द्र प्रसाद को उनके राजनैतिक और सामाजिक योगदान के लिए सन् 1962 में भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान ''भारत रत्न'' से नवाजा गया ।

डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने राजनीति में सन्यास लेने के बाद अपना जीवन पटना के निकट एक आश्रम में बिताया । उनका निधन 28 फरवरी, 1963 को उसी आश्रम में हुआ जहां वह अपना जीवन यापन कर रहे थे । डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी प्रतिभाशाली रूप में उभरे एक सादगी पसंद राष्ट्रपति थे । उनके जीवन से जुड़ी कई ऐसी घटनाएं हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि वह बहुत दयालु और निर्मल स्वभाव के रहे हैं । भारतीय इतिहास में आपसी राजनैतिक छवि एक महान और विनम्र राष्ट्रपति की है । समस्त राजनेताओं के बीच डा0 राजेन्द्र प्रसाद आदर्श के रूप में याद किए जाते हैं ।

- उन्नत विचारों से आप उन्नत जीवन बना सकते हैं ।
- मनुष्य अपने विचारों से अपने संसार का निर्माण करता है।

आर्थिक विकास के लिए टेक्नोलॉजी

साभार : विकास की नई दिशाएं

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् की केन्द्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रयोगशाला के लोकार्पण समारोह में आपके साथ उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । मुझे इस बात की विशेष प्रसन्नता है कि इस प्रशिक्षण प्रयोगशाला का उद्देश्य लोगों, विशेष रूप से नई पीढ़ी के लोगों में जिज्ञासा और तर्कशील मनोवृति को बढ़ावा देना है ।

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई है कि राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् ने पिछले चार वर्षों में देश के विभिन्न भागों में 15 विज्ञान केन्द्र स्थापित किए हैं । मैं उन सभी को बधाई देता हूं जिन्होंने इस कार्य में अपना योगदान दिया है । इस प्रयोगशाला को चालू करने में आपको जो पूर्ण सफलता मिली है वह प्रशंसनीय है । आशा है इससे विज्ञान शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रयासों में मदद मिलेगी ।

मुझे इस बात की भी बड़ी खुशी है कि राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् चार स्तरों – राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, जिला और स्कूल स्तर पर कार्य कर रही है । कलकत्ता, बैंगलौर, मुम्बई और दिल्ली के राष्ट्रीय स्तर के केन्द्रों का उद्देश्य भारी इंजीनियरी, ऊर्जा, विश्व पर्यावरण, परमाणु विज्ञान, अंतरिक्ष अनुप्रयोग, माइक्रो इलैक्ट्रोनिक्स और बायोटेक्नोलॉजी जैसे व्यापक और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य वाले विषयों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं । दूसरी ओर क्षेत्रीय और जिला स्तर के केन्द्रों का ध्यान कृषि, फसल विज्ञान, जन-स्वास्थ्य, पौष्टिक आहार, लघु उद्योग और पर्यावरण प्रबंध जैसी स्थानीय महत्व की दिन-प्रतिदिन की समस्याओं पर लगा रहता है । स्कूलों के विज्ञान केन्द्रों के दो उद्देश्य हैं – स्कूलों में विज्ञान शिक्षा के स्तर पर सुधार करना और जनजागरण अभियान के अंग के रूप में सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारंभ करना ।

परिषद् अपने प्रसार कार्यक्रम को विज्ञान संग्रहालयों और केन्द्रों की चहारदीवारी से बाहर निकालने के प्रयासों पर जो बल दे रही है वह निश्चय ही सराहनीय है । मुझे पता चला है कि बड़े आकार की बसों में चलते-फिरते संग्रहालय बनाए गए हैं जो दूर-दराज के गांवों में जाकर रोजमर्रा की देहाती जिंदगी से संबंध रखने वाले विषयों पर प्रदर्शनियां आयोजित कर रहे हैं । किसानों, भूमिहीन जनजातीय लोगों, गांव की गृहणियों, स्कूली शिक्षा छोड़ चुके बच्चों, विकलांगों और कुटीर उद्योगों में काम करने वालों को जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं । स्कूली बच्चों और विज्ञान अध्यापकों के लिए विज्ञान-मेलों, विज्ञान-गोष्ठियों, प्राकृतिक अध्ययन-शिविरों, औद्योगिक प्रदर्शन, कम्प्यूटर-प्रशिक्षण और दूरबीन –निर्माण व आकाश के अध्ययन जैसी रचनात्मक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं । इसके अलावा चलते-फिरते तारा मण्डलों से खगोल विज्ञान की जानकारी देने डिजाइन प्रतियोगिता जैसे अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । दूसरी और विज्ञान-यात्राओं, विज्ञान-नाटकों, लोकप्रिय प्रदर्शनियों तथा फिल्म और

वीडियो कार्यक्रमों के प्रदर्शन से जनता में विज्ञान आंदोलन को बढ़ावा दिया जाता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि इन प्रयासों से विज्ञान केन्द्रों के शैक्षिक कार्यक्रमों की पहुंच, कार्यक्षेत्र और दायरे को देशभर में बढ़ाने में मदद मिलेगी ।

देश के आर्थिक विकास में विज्ञान और टेक्नोलॉजी की महत्वपूर्ण भूमिका से हम भली भांति परिचित हैं । इसके लिए शैक्षिक संस्थाओं, अनुसंधान तथा डिजाइन प्रयोगशालाओं, उद्योगों और क्षेत्रीय संगठनों को आपसी सहयोग से कार्य करना होगा । तभी जीवन-स्तर में सुधार और समाज मे बदलाव लाने के लिए विज्ञान और टेक्नोलॉजी का समुचित उपयोग सुनिश्चित हो सकेगा । विज्ञान संग्रहालय इस तरह की सभी संस्थाओं को सीधे जनता से जोड़कर समग्र विकास में योगदान करते हैं । मुझे इस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू की वह बात याद आ रही है जो उन्होंने जुलाई, 1962 में बैंगलौर में विश्वेश्वरैया औद्योगिक और प्रौद्योगिकीय संग्रहालय के उदघाटन के अवसर पर कही थी । उन्होंने कहा था : ''संग्रहालय को एक ऐसी जीवंत वस्तु होना चाहिए जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के चित्र हमारी आंखों के सामने उपस्थित कर दे। मैं ऐसे संग्रहालय को पसंद करूंगा जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी परिवहन, संचार और आधुनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण कई अन्य चीजों के विकास को प्रदर्शित करे ।''

हमारे महान राष्ट्रीय नेताओं को देश के विकास के साधन के रूप में विज्ञान और टेक्नोलॉजी की भूमिका पर पूरा भरोसा था । उन्होंने भारत की भावी पीढ़ियों की सुरक्षा, प्रगति और खुशहाली की खातिर स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बेड़ियां पहनकर जेलों में दिन बिताए । वे चाहते थे कि भारत के बच्चों और नौजवानों का जीवन सुखी रहे ।

देश के विज्ञान संग्रहालयों और विज्ञान केन्द्रों से नई पीढ़ी को वैज्ञानिक मनोवृत्ति और जिज्ञासा की भावना का विकास कर प्रगति के लिए आवश्यक संबल जुटाने में मदद मिलती है । माता-पिता और अध्यापकों को चाहिए कि वे बच्चों को इन संग्रहालयों में अवश्य ले जाएं । पंडित जी ने 1961 में कहा था :

> ''मुझे इस बात की ज्यादा परवाह नहीं है कि कोई वयस्क संग्रहालयों को देखने आता है या नहीं, क्योंकि उनके मन में धारणाएं पहले ही बन चुकी होती हैं । कुछ और सीखने के काबिल भी वह हमेशा नहीं रहता । लेकिन बचपन और नौजवानी के दौर में जब व्यक्तित्व का विकास हो रहा होता है, संग्रहालयों में जाकर सीखना बहुत जरूरी है । वहां वे जो चीजें देखेंगे उनका असर उनके मन पर पडेगा । मैं चाहता हूं कि संग्रहालयों के माध्यम से शिक्षा के इस पहलू का विकास किया जाना चाहिए ।''

लोग अक्सर वैज्ञानिक मनोवृत्ति का जिक्र करते हैं । हमें इसका पूरा मतलब जानना जरूरी है । न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए बल्कि सामाजिक विकास और भौतिक तथा आत्मिक उत्थान के लिए भी वैज्ञानिक मनोवृत्ति बहुत आवश्यक है ।

वैज्ञानिक मनोवृत्ति का उपयोग प्रयोगशालाओं और तकनीकी संस्थाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए । हम जो वैज्ञानिक मनोवृत्ति और सूझबूझ उत्पन्न करना चाहते हैं उससे जीवन के हर क्षेत्र में तर्क और युक्ति से कार्य लेना सीख सकेंगे । इससे मानवीय समस्याओं, विशेष रूप से हमारे सोचने, जीवन जीने और समाज से संबंध बनाने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में भी मदद मिलेगी ।

जो अनिष्टकारी शक्तियां संकीर्ण दृष्टिकोण और दुर्भावना फैलाने की कोशिश कर रही हों तो समाज में संतुलन और सदभाव की रक्षा के लिए विवेक और युक्ति से काम लेना जरूरी है । मजबूत और प्रगतिशील समाज को सुखी और खुशहाल बनाने के लिए वैज्ञानिक सोच का होना अनिवार्य है । इस दृष्टि से विज्ञान और टेक्नोलॉजी को समाज के सबसे निचले स्तर तक पहुंचाने के आपके प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । आपके संग्रहालय विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में समसामयिक उपलब्धियों की जानकारी युवा तथा वृद्ध सभी लोगों को देने के साथ-साथ भविष्य का चित्र भी प्रस्तुत करते हैं । वैज्ञानिक संस्थाओं और व्यापक जन-समुदाय के बीच में संग्रहालय जीवंत संपर्क कायम करते हैं । इनके माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान के फायदों को प्रयोगशालाओं से खेतों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लाखों गांवों में पहुंचाया जा सकता है । लेकिन आपके प्रयासों से एक और भी बड़ा फायदा हो रहा है । इनसे देश में वैज्ञानिक जानकारी के प्रसार, समाज में वैज्ञानिक मनोवृत्ति के निर्माण और युवा पीढ़ी के मन में सृजनशीलता बढ़ाने में भी सहायता मिलती है । नई-नई तरह की सहभागिता वाली प्रदर्शनियों तथा प्रस्तुतियों से आप नई पीढ़ी को विज्ञान की राह में आगे बढ़ाने को प्रेरित कर सकते हैं । इससे विज्ञान एक जन-आन्दोलन बनेगा और हमारे समाज मे तर्क बुद्धि तथा रचनात्मकता आएगी । यही हमारा लक्ष्य भी होना चाहिए ।

अपने इन्हीं विचारों के साथ केन्द्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रयोगशाला को राष्ट्र को समर्पित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है । मुझे पूरा विश्वास है कि इस प्रयोगशाला के विज्ञान केन्द्र अभियान को तेज करे, विज्ञान साक्षरता बढ़ाने, देश में वैज्ञानिक मनोवृत्ति के व्यापार-प्रसार और करोड़ों लोगों में बेहतर भविष्य के लिए कार्य करने के लिए प्रेरणा जगाने में बड़ी मदद मिलेगी ।

हुनर तो सबमें होता है फर्क सिर्फ इतना है किसी का छिप जाता है किसी का छप जाता है ।

अपना हाथ दिखाओगी?

गुरनाम सिंह सोढ़ी
उप मुख्य अभियंता

वो घर से निकली थी कुछ लाने के लिए,
बाज़ार में गाती गुनगुनाती वो जा रही थी,
अचानक आवाज़ आई,
बेटी, आओ तुम्हारा हाथ देखता हूँ,
कोई सवाल हो मन में तो उसका जवाब
बोलता हूँ,

मेरा हाथ!
मेरा हाथ देख कर क्या करेंगें?
क्या स्कूल के मास्टर जी की तरह
ये देखेंगे कि नाखून ठीक से कटे हैं या नहीं,
या गणित के मास्टर जी की तरह
बिना गलती के छड़ी से मारोगे,
या बाबूजी की तरह
मेरे हाथ पे एक रुपए का सिक्का रख दोगे?

अरे नहीं!
मैं तुम्हारा हाथ देखकर
ये बताऊँगा कि तुम्हारे कल में क्या है,
कितने रंग और कितनी खुशियाँ हैं,
दुनिया में कहाँ कहाँ जाओगी,
कौन थामेगा तुम्हारा ये प्यारा सा हाथ,
किसके साथ तुम घर बसाओगी,
कहो, जानना है ना ये सब तुम्हे,
वो खिल खिलाकर हँस पड़ी, नहीं,
मेरे कल में क्या है वो आज जानकर क्या करूँगी,

मुझे माँ ने क्या लाने को कहा था,
वो भी ठीक से याद नहीं,
तो ज़िन्दगी के रास्ते कहाँ याद रहेंगे मुझे,
और जिसे मेरा हाथ थामना होगा,
वो उसे ही सोचने दीजिए,

और रही खुशियों और रंगो की बात,
तो ये देखिए,
उसने पास में पड़े सूखे फूल को उठाया,
और दोनों हाथों में प्यार से मसल दिया,
वो फूल उसके हाथ को रंगीन कर गया,
देखिए, मेरे हाथों में तो रंग ही रंग हैं,
और चेहरे पे खुशी ही खुशी,

और वो फिर खिल खिला कर हँस दी
और हवा के झोंके की तरह चल दी कहीं,
वो पण्डित भी ये कह पड़ा,
यूँ ही खुश रहो बेटी।।

याद्दाश्त चले जाने का रहस्य

साभार : मानव जगत के रोचक रहस्य

किसी बड़ी दुर्घटना या शोक समाचार के बाद कुछ व्यक्तियों की याद्दाश्त चली जाती है । वह व्यक्ति अपने अतीत को भूल जाता है, इतना ही नहीं अपने सगे-सम्बन्धियों और मित्रों को भी भूल जाता है, यहां तक कि वह अपना नाम तक भूल जाता है । मनोविज्ञान में इस रोग को स्मृति-लोप कहते हैं ।

याद्दाश्त का चला जाना कई कारणों से हो जाता है । मस्तिष्क में चोट लगना, मानसिक आघात या सदमा, बहुत अधिक थकान, दवाओं का प्रभाव, मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं, वृद्धावस्था, शराब के प्रभाव आदि कुछ ऐसे कारण हैं, जिनसे याद्दाश्त कम हो सकती है या गुम हो सकती है । याद्दाश्त गुम होने के कारण चाहे कुछ भी हों लेकिन मस्तिष्क में होने वाला प्रभाव लगभग एक-सा ही होता है । याद्दाश्त मस्तिष्क में उपस्थित न्यूरान्स के द्वारा कायम रहती है, जब ये न्यूरान्स किसी कारणवश प्रभावित होते हैं, उसी हिस्से की याद्दाश्त समाप्त हो जाती है ।

याद्दाश्त खोने पर या तो पहले की बातें याद नहीं रहतीं या बाद की घटनाएं याद नहीं रहतीं । यह स्थिति कुछ हफ्ते तक, महीनों और वर्षों तक भी रह सकती है । कुछ ऐसे भी व्यक्ति देखे गए हैं, जिनकी जीवन-भर के लिए याद्दाश्त चली जाती है । जब आदमी की याद्दाश्त वापस आती है, तो भूली हुई सभी बातें याद आ जाती हैं । वास्तव में याद्दाश्त वापस आने का मतलब है कि प्रभावित न्यूरान्स ठीक हो गए हैं, लेकिन एक बात निश्चित है कि याद्दाश्त वापस आ जाने पर भी कुछ-न-कुछ प्रभाव मस्तिष्क पर अवश्य रह जाता है, जिससे याद्दाश्त क्षीण हो जाती है । याद्दाश्त खो जाने पर मनोचिकित्सकों की सहायता अति आवश्यक है, याद्दाश्त का कम होना आमतौर पर वृद्धावस्था के कारण होता है, कभी-कभी पेप्टिक अल्सर हाई ब्लड प्रेशर या दमे की बीमारी के कारण भी याद्दाश्त कमजोर हो जाती है ।

मानव स्मरण शक्ति (याद्दाश्त) के मुख्यतः तीन भाग होते हैं – मस्तिष्क का सूचना भण्डार, थोड़े समय की स्मृति और लम्बी अवधि की स्मृति । मस्तिष्क की ज्ञानेंद्रियों द्वारा जो सूचना मिलती है, वह एक सेकण्ड के 3/10 वें समय तक उसके सूचना संग्रह भण्डार में रहती है । यदि इतने समय में उसे मस्तिष्क द्वारा चुन कर थोड़े समय की स्मृति के लिए रख लिया जाए तो वह बनी रहती है वरना फौरन भुला दी जाती है । थोड़े समय के लिए जो सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं, उनका उपयोग करने के बाद मस्तिष्क उन्हें भूल जाता है । यह सूचना स्थायी स्मृति (याद) इसलिए नहीं बन पाती, क्योंकि उसके लिए एकाग्रता की आवश्यकता पड़ती है । मस्तिष्क 6 या 7 इकाईया तक याद रख सकता है । थोड़े समय की याद्दाश्त को स्थायी याद्दाश्त बनाने के

लिए उसे बार-बार दोहराने की आवश्यकता पड़ती है । स्थानीय याद्दाश्त असीमित होती है, इसके द्वारा मनुष्य वर्षो पहले की घटनाओं को याद कर सकता है । स्नायुकोषों में रहने वाली विद्युतीय क्रिया द्वारा उनकी बनावट में परिवर्तन हो जाते हैं, जिसके कारण कोई याद्दाश्त स्थायी बनती है । हमारे मस्तिष्क के पिछले भाग में दृष्टि, केन्द्र के ठीक ऊपर स्मरण शक्ति का केन्द्र होता है ।

चित्रकार की नजर से

पल्लवी पाण्डेय
सहायक प्रबंधक

बचपन में........
कला के इम्तिहान मे, अक्सर कह दिया जाता था
बनाने को कोई चित्र, जो देता हो कोई संदेश
जैसे ''आओ वृक्ष लगाएं'', ''राष्ट्रीय एकता''
''जय जवान जय किसान'' या फिर
''मेरा भारत महान'' ।

हम लग जाते थे अपने ख्यालों को सजाने,
वो ऊंचे-ऊंचे आकाश को छूते वृक्ष बनाने ।
वो जवानों की बंदूक और किसानों के हल बनाने,
अपने उन छोटे-छोटे हाथों से, प्रयास करते थे कुछ बनाके दिखाएं।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई,
हाथों में लिए हाथ दिखाएं या
मुक्ताकाश में भारत का तिरंगा लहराएं,
परन्तु वो बचपन के दिन, वो छोटे से हम
वो छोटी सी सोच और उससे भी छोटे हमारे हाथ,
नहीं दे पाते थे .... उन चित्रों को ।

अब हम बड़े हो गए हैं, बदल गई है हमारी सोच
और बढ़ गए हैं हमारे हाथ,
कि संपादित कर सकते हैं ये कुछ भी
पर अब न तो समय है, न ही इच्छा ।
रह गई है इन चित्रों को बनाने की ।।

डर है कहीं मासुमियत के मारे हम
इस समाज को न दर्शा दें
कहीं समाज का काला रूप कागज में न उतार दें,
कहीं कागज में न उतार दें ।।

दान का महत्व – 2
(देवत्व की प्राप्ति)

प्रवीन कुमार
वरि.म.प्र.

राजकुमार सिद्धार्थ ने सन्यासी को देखकर ही अपना भविष्य निश्चित किया एवं संसार त्याग, तपस्वी बनकर वन में घनघोर तपस्या की । उसके उपरांत उन्होंने समाधि का अनुभव कर परमतत्व (निर्वाण/ मुक्ति) का साक्षात्कार किया जिसके कारण वे बुद्ध कहलाए । अपने जीवन का उद्देश्य संपूर्ण कर वे मानव कल्याण में जुट गए । उन्होंने ध्यान मार्ग का ज्ञान तो प्रसारित किया ही परंतु गृहस्थी में फंसे हुए मनुष्यों से भिक्षा मांग कर उन्हें अपरिमित पुण्य लाभ दिया जिसके कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं :-

तिल का दान :- श्रावस्ती नगर के जेतवन स्थित अपनी कुटिया में भोर के समय ध्यानमग्न हो, रोज की भांति, भगवान बुद्ध मनुष्य लोक को दिव्य दृष्टि से निहार रहे थे । उन्होंने पाया कि राजगिरि नगर में एक स्त्री का आज अंतिम दिन है तथा कर्मानुसार उसे शुभ कार्य न करने के कारण नरक की प्राप्ति की यातना निश्चित है । आज उसने अपने आंगन में तिल के दाने सुखाने के लिए रखे हैं । उन्होंने निश्चय किया कि आज वे इस तिल का ही दान लेकर इस स्त्री को स्वर्ग का लाभ दिलाएंगे ।

कुछ ही क्षणों में भगवान बुद्ध राजगीर नगर में दिव्य रूप से प्रकट हुए और चलते हुए उसी स्त्री के द्वार पहुंच भिक्षा की याचना की । भगवान को देख आदर पूर्वक, भाव विभोर हो उस स्त्री ने प्रणाम किया तथा अंजलि भर तिल के दाने भिक्षा पात्र में अर्पित कर दिए । ''सुखिनी हो'' कह कर भगवान बुद्ध ने विदा ली । जब रात्रि में उस स्त्री का देहांत हुआ तो इस शुभकर्म के पुण्य फल के कारण उसे स्वर्ग लोक में उत्पन्न होकर द्वादश (12) योजन बड़े स्वर्णिम भवन की प्राप्ति हुई । स्वर्ग लोक के भ्रमण पर गए हुए, भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य महामौग्ल्यान ने यह देखकर देवी से पूछा : ''अवर्णनीय कांति से संपन्न, सभी दिशाओं को प्रकाशित किए हुए, हे देवी, कौन हो तुम तथा मनुष्य लोक में किन कर्मों के पुण्य के द्वारा तुम्हें ऐसे मनोवांछित दिव्यभोग की प्राप्ति हुई है ?''

देवी : ''मनुष्य लोक में मैंने पवित्रता से परिपूर्ण भगवान बुद्ध को अपने हाथों से, प्रसन्नता पूर्वक तिल का दान अर्पण किया । उसी कर्म के पुण्य के द्वारा ही आज मैंने स्वर्ग लोक की प्राप्ति कर ऐसी कांतिपूर्ण अवस्था तथा मनोवांछित दिव्य भोग की प्राप्ति की है ।''

विमानवत्थु 1.10

श्रद्धा भावना का दान : श्रावस्ती नगर में एक धनवान परंतु अश्रद्धालु ब्राह्मण रहता था । महाकंजूस होने तथा किसी को भी दान नहीं देने के कारण वह 'अदिन्न पुब्बको' (अदानी पुरूष) के नाम से जाना जाता था । धन का व्यय होने के डर से उसने अपने पुत्र के कुण्डल आदि आभूषण उसने अपने हाथों से बनाए थे । उसने अपने पुत्र मट्ठकुण्डली को यह शिक्षा दी थी कि वह कभी भी भगवान बुद्ध तथा उसने शिष्यों के समीप भी न जाए । पुत्र के असाध्य रोगी होने पर पिता ने धन के लोभ में उसकी चिकित्सा नहीं की तथा उसे घर पर आंगन में ही मृत्यु शय्या पर रख दिया गया जिससे कि उसे देखने आने वालों को घर की धन सम्पत्ति का ज्ञान न हो । भगवान बुद्ध ने रात्रि में ध्यानावस्था में संसार का अवलोकन करते हुए पाया कि उसके पुत्र का अंत समय निकट है तथा उसे अधोगति (नरक, प्रेतयोनि, पशुयोनि या असुर) निश्चित है। करूणा के सागर भगवान बुद्ध ने निश्चय किया कि वे दोनों पिता पुत्र को धर्ममार्ग में लाकर सदगति दिलाएंगे । अतः भिक्षा के समय वे उनके घर के पास पहुंचे तथा शक्तिपात किया । पुत्र मट्ठकुण्डली को उस समय अपने अंतःकरण में दिव्य प्रकाश का अनुभव हुआ । आंखें खोलने पर उसने देखा कि भगवान बुद्ध उसे करूणापर्वूक निहार रहे हैं । उसने श्रद्धापूर्वक मन ही मन भगवान बुद्ध की वंदना करते हुए हाथ जोड़कर प्रणाम किया । बाद में उसी दिन वह मृत्यु को प्राप्त हुआ परन्तु वह तावंतिस स्वर्ग में देवत्व प्राप्त कर उत्पन्न हुआ (जहां आयु 360 लाख वर्ष है) वहां उसे बारह योजन विशाल भवन की प्राप्ति हुई । अंतिम क्रिया के अगले दिन पिता श्मशान में गया तथा 'हा मट्ठकुण्डली' कह कर विलाप करने लगा । यह देखकर देवता स्वरूप पुत्र मट्ठकुण्डली वहां दिव्य आभूषणों व मालाओं से सुसज्जित होकर राजकुमार के समान प्रकट हुआ और कुछ ही दूर 'हाय सूर्य, हाय चन्द्र' कह कर वह भी विलाप करने लगा। पिता ने पूछा : ''आभूषणों से सुसज्जित, चंदन का लेप किए हुए हे कुमार क्या कारण है तुम्हारे विलाप करने का?''

कुमार : ''मेरे दीप्तिमान स्वर्ण रथ में दो पहिये नहीं हैं इनके बिना मेरा रथ व्यर्थ है, इस दुख के कारण मैं अपने प्राण त्याग दूंगा।''

पिता : ''स्वर्ण, मणि अथवा चांदी से बने हुए, हे कुमार, मुझे बताओ, मैं तुम्हें रथ के पहिये लाकर दूंगा।''

रोगी होने पर दवा भी न लाने वाले पिता को सबक सिखाने के लिए वह बोला : ''मुझे सूर्य एवं चंद्र ही रथ के पहिये के लिए चाहिए, जोकि मेरे स्वर्णिम रथ की शोभा बढाएंगे ।''

अब पिता ने उसे पागल समझते हुए कहा कि ''प्रतीत होता है कि मूर्ख हो तुम, जिसकी इच्छा करते हो उन सूर्य, चंद्र को तुम जीवन भर नहीं पाओगे ।''

कुमार : ''इसी प्रकार से जिसकी मृत्यु हो चुकी है, जिसका जीवन समाप्त हो चुका है, अब उसके लिए विलाप करना क्या उचित है? अब उसे याद कर उसे पुकारने से क्या लाभ ?''

पिता : ''हे कुमार यह सत्य है, जिसका जीवन समाप्त हुआ उसके वापस आने की कोई संभावना नहीं, इसलिए मेरा विलाप करना व्यर्थ है, यह मेरी ही नासमझी है, तुम्हारे वचनों से मेरा मन शांत हुआ। परन्तु हे कुमार, तुम कौन हो, क्या तुम कोई देवता हो, गंधर्व हो या देवराज इंद्र हो, किसके पुत्र हो तुम ?''

कुमार : ''मैं वही तुम्हारा पुत्र हूँ, जिसका तुम कल अंतिम संस्कार कर चुके हो और जिसके लिए तुम विलाप कर रहे हो, परन्तु मैंने कुशल कार्य करने के कारण स्वर्ग में उत्पन्न हो देवत्व को पाया है।''

पिता : ''हमारे घर में कभी न कोई दान दिया गया, न कभी व्रत-उपवास रखा गया फिर भी किस शुभ कर्मों के द्वारा तुम देवलोक में उत्पन्न हुए हो ।''

कुमार : ''मैं रोगी था, मृत्यु शय्या पर था । अंत समय में मैंने अनुपम तथागत बुद्ध को देखा और उन्हें अंजलिबद्ध हो मुदित मन से श्रद्धावान होकर नमस्कार किया, केवल इसी एक शुभ कर्म के कारण ही मुझे मृत्युपरांत इस महान अवस्था की प्राप्ति हुई है।''

इन वचनों को सुनकर, पिता का सम्पूर्ण शरीर व मन प्रीति सौमनस्य से भर उठा और कहा: ''अदभुत, केवल अंजली मात्र प्रणाम करने से ऐसी गति की प्राप्ति होती है तो मैं अभी अपना सम्पूर्ण जीवन भगवान बुद्ध के लिए समर्पित करता हूँ ।''

कुमार ने समर्थन करते हुए कहा ''हां, आज ही तुम भगवान बुद्ध की शरण लो और अभी से पंचशील व्रत लो जोकि हैं – प्राणियों के प्रति करूणावान हो इनकी हत्या न करना, सत्य का पालन करना, ब्रह्मचर्य, चोरी न करना तथा नशा न करना ।''

पिता : ''मैं अभी से ये सदधर्म व्रत लेता हूँ तथा कुशल मार्गदर्शन कराने के कारण अब तुम्हें अपना गुरू मानता हूँ ।''

पुत्र के मार्गदर्शन से पिता ने अनेक लोगों के साथ भगवान बुद्ध को अपने घर में भोजन पर आमंत्रित किया जिसके अंत में पिता ने सबको घटित घटना बताई । परन्तु किसी व्यक्ति ने यह प्रश्न किया कि यह कैसे संभव है कि सारा जीवन बिना कोई दान आदि कर्म किए हुए, केवल मन की श्रृद्धा का दान करने से ही कैसे कोई व्यक्ति स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है ? इस पर भगवान बुद्ध ने इच्छा प्रकट की कि मट्ठकुण्डली वहां सबके समक्ष प्रकट हो । मट्ठकुण्डली अपने देव शरीर में दिव्य आभूषणों से सुसज्जित हो वहाँ प्रकट हुआ तथा उसने अपने तावंतिस देवलोक में उत्पन्न होने की सम्पूर्ण कथा सुनाई । इसी प्रमाण से वहां उपस्थित लोगों ने माना कि मन की श्रृद्धा का दान भी सदगति प्रदान करता है।

तब भगवान बुद्ध ने मन पर प्रवचन दिया :

२. मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पसन्नेन, भासति वा करोति वा।
ततो नं सुखमन्वेति, छायाव अनपायिनी ॥

''मन ही अग्रणी है, मन ही प्रमुख है, सभी कुछ मनोमय है।
जो मन के द्वारा शुभकर्म करता है, उसके पीछे सुख छाया की भांति हो जाता है।''

धम्मपद-2

प्रवचन के अंत में पिता व पुत्र दोनों को श्रोतापन प्रथम ध्यान समाधि आनंद का लाभ हुआ (जिसमें केवल सात उच्च देव/मनुष्य जन्मों में ही मुक्ति निश्चित है) इसके उपरांत ब्राह्मण अदिन्नपुब्बक सदा के लिए भगवान बुद्ध का अनुयायी हो गया तथा उसने अपनी अधिकांश संपत्ति उनके संघ को दान कर दी ।

विमानवत्थु 7.9

बचे हुए चावल का दान : पुराने समय में हैजा आदि महामारी फैलने के कारण पूरे परिवार नष्ट हो जाया करते थे । उस समय यह प्रथा थी कि परिवार के बचे हुए लोग द्वार का उपयोग नहीं करते हुए, बल्कि घर की दीवार तोड़कर उस घर का त्याग कर देते थे । राजगिरि नगर में हैजा फैलने के कारण एक परिवार में एक महिला के अतिरिक्त सभी मृत्यु को प्राप्त हुए । अतः उस महिला ने प्रथा अनुसार दीवार तोडकर घर का त्याग किया तथा पड़ोसियों के ही घर के पीछे अति विपन्न अवस्था में दिन काटने लगी। पड़ोसी उस पर दया कर, बचा हुआ भोजन आदि उसे दे देते थे ।

भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य महाकाश्यप सात दिवसीय ध्यान समाधि से उठे । उन्होंने सोचा कि किस व्यक्ति से दान लेकर उसे सदगति प्रदान करूं । दिव्य दृष्टि से उन्होंने उस निर्धन स्त्री को देखा कि उसका अंत समय निकट है तथा उसके कर्मानुसार उसका नरक जाना निश्चित है । उन्होंने निश्चय किया कि उस स्त्री से दान लेकर उसे वे पुण्य की प्राप्ति करवाएंगे तथा उसे नरक से मुक्ति तथा स्वर्गलोक की प्राप्ति हो, सुख प्रदान करेंगे । इस प्रकार वे सवेरे भिक्षा पात्र ले, उस स्त्री के स्थान की ओर चल दिए।

इसी बीच तावंतिस देव लोक के देवराज इंद्र ने भी सोचा कि इन्हें भोजन कराकर वे पुण्य की प्राप्ति करें तथा वे मनुष्य रूप में प्रकट हुए और महाकाश्यप को विभिन्न दिव्य व्यंजनों के दान द्वारा उन्हें संतुष्ट करने की प्रार्थना करने लगे । महाकाश्यप ने उन्हें पहचान लिया परन्तु यह कहकर मना कर दिया कि वे तो उस निर्धन स्त्री के कल्याण हेतु जा रहे हैं । उस निर्धन स्त्री के पास पहुंच उन्होंने भिक्षा याचना की। स्त्री के पास केवल कुछ बचा हुआ चावल ही था, उसे उपयुक्त न जानकर उसने उन्हें आगे जाने को कहा, परन्तु महाकाश्यप ने फिर से याचना की । तब उस स्त्री ने अपना बचा हुआ चावल उन्हें दान कर दिया । महाकाश्यप ने उसकी कल्याण की कामना करते हुए कहा कि तीन जन्म पूर्व वह उनकी मां थी । यह कहकर वे चले गए । उसी रात उस स्त्री का देहांत हुआ तथा वह दानफलस्वरूप, तावंतिस देवराज इंद्र से भी ऊंचे, निम्मानरति नामक स्वर्गलोक में उत्पन्न हुयी (जहाँ आयु 23040 लाख वर्ष है) । तावंतिस देवलोक में उसे वहां न पाकर देवराज इंद्र ने संशयपूर्वक सोचा कि उस स्त्री को दिव्य सम्पत्ति

(पुण्य) प्राप्त हुई है परन्तु वह यहां दृष्टिगोचर नहीं, अतः महाकाश्यप से प्रश्न किया कि उस स्त्री की क्या गति हुई ? इस पर महाकाश्यप बोले कि दूसरों से भिक्षा से प्राप्त हुए बचे चावल भी जो उसने मुझे दान कर दिये, उस दान के प्रभाव से वह अति उच्च निम्मानरति स्वर्गलोक में उत्पन्न हो सुख को प्राप्त हुई है । जहां के देव दिव्य निर्माण में आनंद का अनुभव करते हैं । देवराज इंद्र ने उस महादान की प्रशंसा करते हुए कहा संसार में सौ-सौ हाथी, घोड़े आदि धन सम्पत्ति का दान भी इस थोड़े से चावल के दान के समान नहीं जिसके कारण इस स्त्री को इतनी उच्च गति की प्राप्ति हुई है जिससे उसका दिव्य प्रभाव सारे संसार पर हुआ है। वापस आकर महाकाश्यप ने यह सारा वृतांत भगवान बुद्ध को बताया और उन्होंने इसकी अति प्रशंसा करते हुए समर्थन किया तथा अपने प्रवचनों में इसे सम्मिलित किया ।

विमानवत्थु 2.3

मंगल कामना का दान : भगवान बुद्ध ने दान आदि पुण्य कर्मो की सदा प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया है कि वे ही सच्चे सुख का साधन हैं । उन्होंने बताया कि बहुत समय पहले एक पूर्वजन्म में उन्होंने 'भवतु सर्व मंगलम' मंगल कामना का मन ही मन सात वर्ष तक तप करते हुए शरीर त्याग किया । ब्रह्मांड को केवल इस मंगलकामना का दान देने का यह फल हुआ कि वे सात कल्पों तक पुर्नजन्म को प्राप्त नहीं हुए तथा वे उच्च आभास्वर ब्रह्म लोक में रहे तथा उसके बाद महाब्रह्मा बने । (सृष्टि के उत्पन्न होने [Big Bang] तथा अंत में नष्ट हो जाने [Big Contraction] के एक चक्र को एक कल्प कहा जाता है ।) इसके बाद उन्होंने 36 बार देवराज इंद्र बन स्वर्ग पर राज किया । इस पुण्य के और क्षीण होने पर भी उन्होंने सैकड़ों बार राजकुल में जन्म लेकर पृथ्वी पर चक्रवर्ती सम्राट बने और धर्मपूर्वक शासन किया । अतः सर्व को मंगलकामना का दान भी अति उच्च सदगति की और ले जाता है।

अ.नि.मेत्तसूत्र 7.58(ii)

देवताओं की भी आयु : देवताओं को अमर नहीं माना गया है बल्कि उनकी आयु उनके पुण्य से निर्धारित हो जाती है । अधिध्म्म पिटक के विभंग में देवताओं की आयु का वर्णन है :

1. **छः देवलोक** : दान आदि शुभ कर्मो से प्राप्त छः देवलोकों की आयु इस प्रकार है :-
   चातुमहाराजिक (90 लाख वर्ष), तावतिंस (360 लाख वर्ष), यामा (1440 लाख वर्ष), तुषित (5760 लाख वर्ष), निम्मानरति (23040 लाख वर्ष) एवं परनिम्मितवशवर्ती (92160 लाख वर्ष)

2. **रूप ब्रह्मलोक** : ब्रह्मलोक केवल ध्यान समाधि द्वारा प्राप्त किए जाते हैं वहां आयु इस प्रकार है:-

   प्रथम ध्यानसमाधि : (अल्पसमाधि) ब्रह्म परिसज्ज (1/3 कल्प), (मध्यम समाधि) ब्रह्मपुरोहित (1/2 कल्प), (उच्च समाधि) महाब्रह्मा (1 कल्प) ।

   द्वितीय ध्यानसमाधि (अल्प, मध्यम, उच्च) : परित्ताभा (2 कल्प), अप्पमाणाभा (4 कल्प), आभास्वर (8 कल्प)।

तृतीय ध्यानसमाधि (अल्प, मध्यम, उच्च) : परित्तसुभा (16 कल्प), अप्रमाणसुभा (32 कल्प), शुभकिण्हा (64 कल्प) ।

चतुर्थ ध्यानसमाधि के द्वारा और उच्च लोक प्राप्त किए जाते हैं जैसे :- असञ्ञसता तथा वेहप्फला (500 कल्प), अविहा (1000 कल्प), अतप्पा (2000 कलप), सुदर्शा (4000 कल्प), सुदर्शी (8000 कल्प), अकनिट्ठा (16000 कल्प आयु)

3. **अरूप ब्रह्मलोक** : इनके अतिरिक्त सर्वोच्च ध्यान समाधियों के द्वारा अरूप ब्रह्मलोकों की प्राप्ति का व्याख्यान है जहां रूप शरीर नहीं बल्कि केवल मन ही है :

अनंत आकाश ध्यान समाधि अनुभव (20 हजार कल्प)
अनंत चेतना विस्तार ध्यान समाधि अनुभव (40 हजार कल्प)
परम शून्य ध्यान समाधि अनुभव (60 हजार कल्प)
न संज्ञा न असंज्ञा ध्यान समाधि अनुभव (84 हजार कल्प)

अंततः भगवान बुद्ध ने कहा कि :

१०२९. उक्खित्ता पुञ्ञतेजेन, कामरूपगतिं गता।
भवग्गतम्पि सम्पत्ता, पुनागच्छन्ति दुग्गतिं॥

ताव दीघायुका सत्ता, चवन्ति आयुसङ्ख्या।
नत्थि कोचि भवो निच्चो, इति वुत्तं महेसिना॥

तस्मा हि धीरा निपका, निपुणा अत्थचिन्तका।
जरामरणमोक्खाय, भावेन्ति मग्गमुत्तमं॥

भावयित्वा सुचिं मग्गं, निब्बानोगधगामिनं।
सब्बासवे परिञ्ञाय, परिनिब्बन्ति अनासवाति॥

सभी देव ब्रह्मा अवस्थाएं अति आनंद की दीर्घआयु अवस्थाएं हैं
परन्तु पुण्य के तेज के समाप्त हो जाने पर बार-बार पुर्नजन्म लेना ही पड़ता है
दुर्गति होती है और फिर से दुख का अनुभव करना पड़ता है ।
इसलिए बुद्धिमान वही है जो इस पवित्र मार्ग के द्वारा कर्म संस्कारों का नाश कर
इनसे भी परे अजर अमर निर्वाण (मोक्ष) अवस्था की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं
जिसकी प्राप्ति के बाद किसी भी लोक में पुर्नजन्म नहीं है।

अभिधम्म पिटक-विभंग -18.6.2

उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में भागीरथी नदी पर नदी संरक्षण एवं बाढ नियंत्रण कार्य

ए.के.गहलोत
मुख्य अभियंता

कलावती रावत
वरि. अभियंता

परिचय

नदी संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण कार्य नदियों के प्रबंधन का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है । नदी संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य पुलों तथा अन्य महत्वपूर्ण संरचनाओं, आवास एवं कृषि क्षेत्रों को नदी द्वारा होने वाली क्षति से बचाव करना है। पहाड़ी क्षेत्रों में नदियां बहुत संकीर्ण तथा गहरे क्रॉस सेक्शन के साथ-साथ बहुत तीव्र तट ढलाव वाली होती हैं । नदियों में बहाव बहुत ही तीव्र तथा उनके तल चट्टान, बड़े पत्थर एवं रेत बजरी वाले होते हैं । भागीरथी, उत्तराखण्ड की इन्हीं नदियों में से एक है, जिसके कारण जून, 2013 की प्राकृतिक आपदा के दौरान उत्तरकाशी शहर को बहुत नुकसान पहुंचा था ।

परियोजना क्षेत्र

उत्तरकाशी जिला उत्तराखण्ड राज्य में भागीरथी के तट पर 78° 26’ पूर्व तथा 3° 44’ उत्तर में ऋषिकेश से 155 किमी. की दूरी पर स्थित है। समुद्र तल से 1150 मी. की ऊंचाई पर अपर हिमालय में आने वाले उत्तरकाशी शहर को भूकंप, बाढ़ तथा भूस्खलन से अत्याधिक खतरा है। यह क्षेत्र हिमालय के अत्यंत संवेदनशील भूकम्प जोन (जोन 5) में स्थित है, जिस कारण संरचनाओं को डिजाइन करते समय मानकों के अनुसार भूकंप लोड को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है।

अधिकतर कार्य क्षेत्र, पहले से क्षतिग्रसत आवासों द्वारा घिरा हुआ है। जोशियारा बैराज के जलाशय की परिधि के साथ का क्षेत्र अधिक जलसंख्या वाला तथा बाढ़ से असुरक्षित भी है। मनेरी भाली चरण-प्रथम जल विद्युत परियोजना के टेल रेस चैनल (टीआरसी) के आउटफाल के पास का क्षेत्र भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। शहर के मध्य में मलिन बस्ती को डूबने के तत्काल जोखिम का सामना करना पड़ा तथा वहां पर बाढ़ नियंत्रण एवं सुरक्षा कार्यो के कन्स्ट्रक्शन हेतु जगह भी उपलब्ध नहीं है ।

समस्या मूल्यांकन

उत्तरकाशी शहर, जोकि उत्तराखण्ड राज्य में भागीरथी नदी के दोनों तटों पर स्थित है, बाढ़ के दौरान मृदा कटाव से अत्याधिक असुरक्षित है। उत्तराखण्ड में दिनांक 16 से 17 जून, 2013 को आई भारी वर्षा तथा बादल फटने से असीगंगा व सुवारीगढ़ (भागीरथी नदी की सहायक नदियों)

के बहाव में असामान्य वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप भागीरथी नदी का बहाव भी असामान्य रूप से बढ़ गया। उच्च बाढ़ जल के साथ बड़े-बड़े पत्थर एवं लकड़ी के लॉग इत्यादि भी शामिल हो गए जिस कारण दोनों तट अत्यंत रूप से क्षतिग्रस्त हुए । मानेरी भाली चरण-प्रथम तथा चरण-द्वितीय जल विद्युत परियोजनाओं के विद्यमान नदी संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण कार्य, दोनों तटों पर स्थित अन्य सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों को गंभीर क्षति हुई। बाढ़ की तीव्रता इतनी अधिक थी कि दोनों तरफ 10-15 मीटर की चौड़ाई के अंतर्गत वाणिज्यिक परिसरों आवासों के साथ-साथ झूला पुल भी बह गया तथा भारी वर्षा के कारण ढलान अस्थाई हो गया जिस कारण पहले से किए गए संरक्षण कार्य क्षतिग्रसत हो गए और पक्की सड़के तथा पुलों आदि को बहुत नुकसान पहुंचा ।

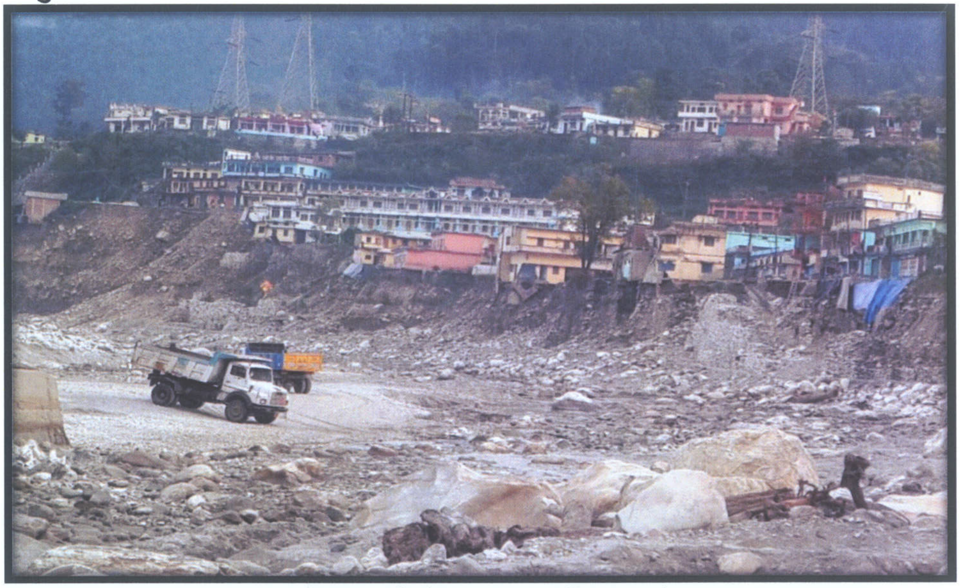

भागीरथी नदी के तट पर क्षतिग्रस्त क्षेत्र

मानेरी भाली चरण प्रथम जल विद्युत परियोजना के पावर हाउस के समीप क्षतिग्रस्त क्षेत्र

चूंकि नदी उत्तरकाशी शहर के मध्य से होकर गुजरती है, दोनों तटों पर स्थित आवासीय व वाणिज्यिक भवन बाढ़ों से असुरक्षित हैं । इसलिए उत्तरकाशी शहर तथा जोशियारा बैराज के जलाशय क्षेत्र के आस-पास आवासीय तथा वाणिज्यिक भवनों की सुरक्षा के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि तत्काल प्रभाव से उपयुक्त नदी संरक्षण तथा बाढ़ नियंत्रण कार्य किए जाएं ।

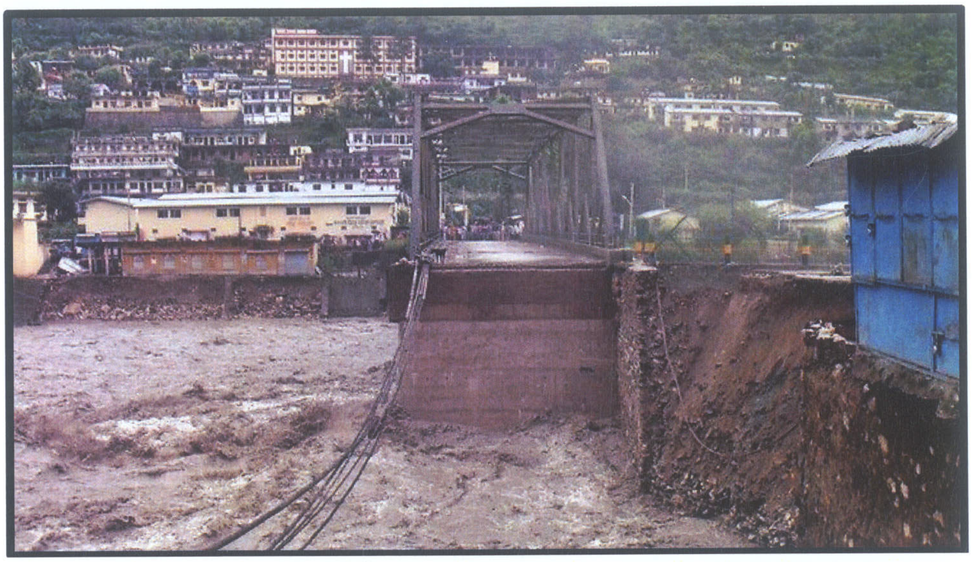

टिलोथ पर क्षतिग्रस्त झूला पुल

उत्तरकाशी शहर की सैटेलाइट इमेज

वर्तमान तकनीकी सहायता

उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम ने बुरी तरह से प्रभावित क्षेत्र हेतु नदी संरक्षण कार्य के लिए विस्तृत डिजाइन तथा निर्माण ड्राइंग में तकनीकी सहायता और गुणवत्ता आश्वासन हेतु वाप्कोस को निर्माण पर्यवेक्षण व सलाहकार मानीटरिंग में तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाने हेतु नियुक्त किया है। वाप्कोस विशेषज्ञों ने सभी तकनीकी पहलुओं तथा स्थल विशिष्ट स्थलाकृति, भूगौलिक/तकनीकी तथा मृदा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बाढ़ नियंत्रण कार्यों को डिजाइन किया है। प्रत्येक गतिविधि, लक्ष्य, उपलब्धि इत्यादि का समय अनुसूची के साथ विस्तृत निर्माण कार्यक्रम तथा निर्माण पद्धति विज्ञान प्रस्तावित किया है। गुणवत्ता नियंत्रण के साथ-साथ मानीटरिंग की व्यापक योजना तथा गुणवत्ता परीक्षण, मिक्स डिजाइन/कंक्रीट ब्लाक इत्यादि भी किया जा रहा है। गुणवत्ता परीक्षण हेतु साइट पर नवीनतम उपकरण युक्त प्रयोगशाला भी स्थापित की गई ।

सर्वेक्षण तथा अन्वेषण

वाप्कोस विशेषज्ञों ने प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने तथा किस प्रकार के संरक्षण कार्य उपलब्ध करवाए जाने हैं, के लिए क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का व्यापक स्थल दौरा किया । किए जाने वाले सर्वेक्षण व अन्वेषण कार्यों के विस्तार का आकलन भी किया गया । निम्नलिखित चित्र-1, 2 प्रस्तावित नदी संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण कार्यों के प्लान को दर्शाता है ।

स्थलाकृति सर्वेक्षण

परियोजना क्षेत्र का स्थलाकृति सर्वेक्षण टोटल स्टेशन तथा जीपीएस के द्वारा टिलोथ पुल के प्रतिप्रवाह के लगभग 200 मी. तथा बैराज के अनुप्रवाह में 750 मी. तक किया गया है। सर्वेक्षण का उद्देश्य प्रभावित क्षेत्रों का स्थलाकृतिक पहलू लेना तथा नियमित अंतराल में नदी एस-सेक्शन तथा क्रॉस सेक्शन लेना है।

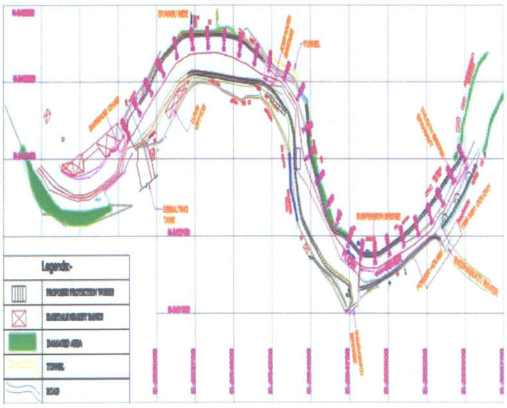

चित्र:1 प्रस्तावित संरक्षण कार्यों का प्लान

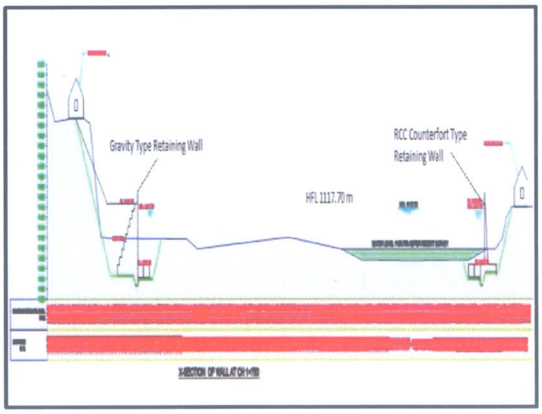

चित्र :2 नदी का क्रॉस सेक्शन प्रस्तावित बाढ़ नियंत्रण कार्य सहित

भूतकनीकी अन्वेषण

भूतकनीकी अन्वेषण, नदी के दाएं तथा बाएं तट के साथ अपेक्षित डिजाइन पैरामीटर के आकलन के लिए किया गया है। नदी तल पर 1 मी. से 4 मी. की विविध गहराई वाले गड्डे खोदे गए हैं। चयनित स्थानों पर बोरहोल्स ड्रिल किए गए हैं ताकि फाउडिंग स्टेटा की स्थिति का पता लगाया जा सके ।

डिजाइन विवेचना

विभिन्न प्रकार के क्षतिग्रस्त क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित प्रकार के नदी संरक्षण एवं बाढ़ नियंत्रण कार्य प्रस्तावित किए गए हैं :-

- प्लम कंक्रीट ग्रेविटी सुरक्षा दीवार रीनफोर्स्ड सीमेंट कंक्रीट (आर.सी.सी.) कैंटीलीवर सुरक्षा दीवार ।
- रीनफोर्स्ड सीमेंट कंक्रीट (आर.सी.सी.) काउंटरफोर्ड सुरक्षा दीवार ।
- नदी के तटबंधन के तटीय ढाल का उच्च वेग द्वारा कटाव से सुरक्षा कार्य ।
- तटबंध के निचले सिरे को कटाव के प्रति सुरक्षा प्रदान करने के लिए टो-वॉल/कट आफ वॉल तथा प्लम कंक्रीट ब्लॉक के लांचिंग एप्रेन प्रकार के सुरक्षा कार्य ।

सभी बाढ़ नियंत्रण एवं सुरक्षा कार्य 100 वर्ष के रिटर्न पीरियड के लिए डिजाइन किए गए हैं। हाइड्रोलॉजिकल स्टडी के अनुसार, 100 वर्ष रिटर्न पीरियड का आंकलन 5000 क्यूमेक आता है और यही डिजाइन फ्लड, बाढ़ नियंत्रण एवं सुरक्षा कार्यों के डिजाइन हेतु प्रयोग किया गया है।

परियोजना क्षेत्र में नदी बड़े-बड़े पत्थर एवं बोल्डर्स को सम्मिलित किए हुए है तथा दोनों ही तटों पर घनी आबादी बसी हुई है । जिस कारण से वहां कंस्ट्रक्शन कार्य हेतु जगह की उपलब्धता भी बहुत कम है । बाढ़ नियंत्रण एवं सुरक्षा कार्यों को प्लान करते समय साइट की इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखा गया है। सभी सुरक्षा कार्य उपयुक्त भारतीय मानकों के अनुसार डिजाइन किए गए हैं ।

बाढ़ एवं सुरक्षा दीवार के डिजाइन पैरामीटर इस प्रकार है :

Density of Concrete	2.4 t/m^3
Density of Water	1.0 t/m^3
Density of Wet Soil	2.0 t/m^3
Density of Saturated Soil	2.1 t/m^3
Density of Submerged Soil	1.1t/m^3

Max. Allowable Compressible Strength of Concrete (M-20)	700 t/m^2
Angle of Internal friction (Ψ)	35^0
Net Bearing Capacity of Soil in normal case	50 t/m^2
Gross Safe Bearing Capacity	56.26 t/m^2
Net Bearing Capacity of Soil in Seismic Case	62.5 t/m^2
Gross Safe Bearing Capacity of Soil in Seismic Case	68.75 t/m^2
Angle of inclination at back of soil (β)	0^0
Angle of Internal Friction b/w wall & earth fill (δ)	23.3^0
Coefficient of friction at base b/w Soil & Concrete (μ)	0.6
Angle with earth face of the wall to Horizontal (α)	90^0

स्थिरता विश्लेषण, दोनों ही परिस्थिति स्थिति एवं गतिक (भूकम्प) परिस्थिति के लिए किया गया है तथा सेक्शन की निम्न स्थिति के प्रति जांच की गई ।

बेयरिंग प्रेशर के लिए जांच

$P_{maximum} = \sum V/(b\,[1 + 6e/b])$

$P_{minimum} = \sum V/(b\,[1 - 6e/b])$

स्लाइडिंग के लिए जांच

Factor of Safety = μ * Vertical Force / Horizontal Force >1.5 OK

ओवरटर्निंग के लिए जांच

Factor of Safety = $\frac{\sum ClockwiseMoment}{\sum AnticlockwiseMoment}$ > 2.0 OK

परियोजना कार्यान्वयन तथा गुणवत्ता आश्वासन

निर्माण पर्यवेक्षण तथा मानीटरिंग कार्य हेतु साइट पर नवीनतम उपकरण युक्त प्रयोगशाला स्थापित की गई है । वाप्कोस विशेषज्ञ अनुमोदित डिजाइन व ड्राइंग के अनुसार ही निर्माण गतिविधियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हैं । समय-समय पर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की जांच भारतीय मानकों के अनुसार की जाती है। विभिन्न निर्माण कार्यों की स्थिति एवं उनकी गुणवत्ता की प्रगति रिपोर्ट के रूप में संकलित किया जाता है। वाप्कोस का अनुभवी स्टाफ, गुणवत्ता नियंत्रण जांच तथा विभिन्न निर्माण संबंधी समस्याओं का समाधान कार्य बहुत ही अच्छे तरीके से निष्पादित कर रहा है।

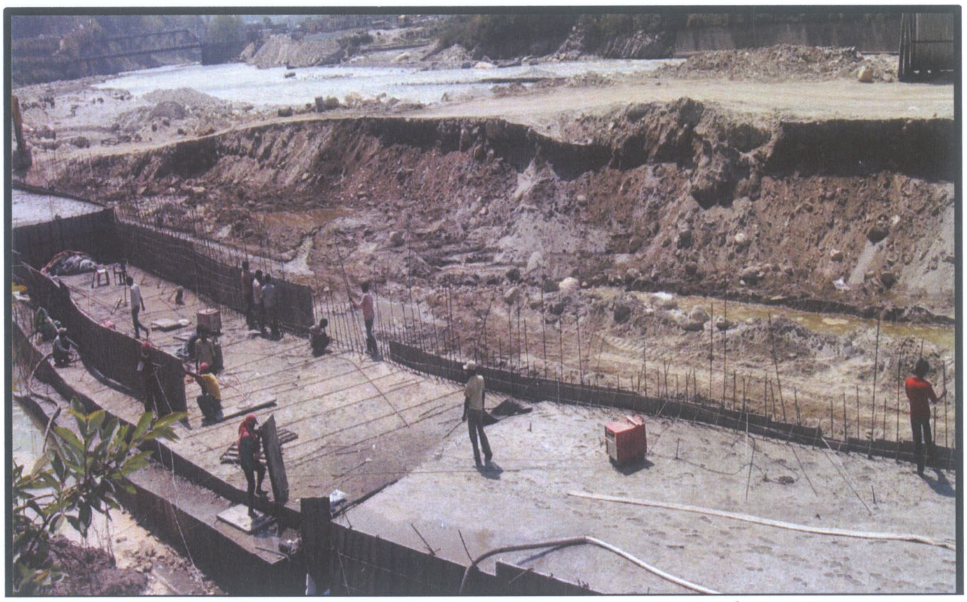

भागीरथी नदी के तटों पर प्रतिधारण दीवार का निर्माण

निष्कर्ष

कार्यक्षेत्र के अंतर्गत अधिकांश क्षेत्र पहले से ही क्षतिग्रस्त आवासीय भवनों से भरा हुआ है, नदी संरक्षण एवं बाढ़ सुरक्षा कार्यों के निर्माण हेतु बहुत कम क्षेत्र होते हुए भी वाप्कोस बहुत ही चुनौतीपूर्ण ढ़ंग से कार्य को निष्पादित कर रहा है तथा कार्य समाप्ति की ओर अग्रसर है।

सपना वो नहीं जो आप नींद में देखें,
सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।

-डा0 ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED

(भारत सरकार का उपक्रम - जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय)
(A Government of India Undertaking-Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2016 की शुभकामनाएं

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सभी महिलाओं द्वारा हासिल उत्कृष्ट सफलता और उनके द्वारा विश्व स्तर पर निरंतर अर्जित की जा रही सफलता को सम्मान देने का अवसर है । सबसे महत्वपूर्ण, यह स्त्री पुरुष समानता के लिए चल रहे प्रयासों तथा क्षेत्रों पर जहां हमें अभी भी ध्यान देने की आवश्यकता है पर प्रकाश डालता है ।

हमारी कम्पनी तथा राष्ट्र की सफलता के लिए स्त्री पुरुष समानता प्राप्त करना पूर्णत: अनिवार्य है । आज, हम वैश्विक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में रह रहे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी सफलता के लिए महिलाओं की सक्रिय व पूर्ण भागीदारी पूर्णत: अनिवार्य है।

मैं अब तक प्राप्त हमारी सफलता के लिए वाप्कोस में कार्यरत सभी महिलाओं के परिश्रम, दृढ़ता तथा वचनबद्धता का सम्मान करता हूं । मैं सभी पुरुष तथा महिला कार्मिकों से अपेक्षा करता हूं कि आगे के संवर्धन तथा वाप्कोस को विश्व में श्रेष्ठ तथा विश्वसनीय संगठनों में से एक बनाने हेतु महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, मैं उन सभी के साथ हूं जो महिला अधिकारों तथा स्त्री पुरुष समानता हेतु कार्यरत हैं । सभी महिलाओं को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं जो शांतिपूर्ण, स्वस्थ तथा सुखी समाज की आधारशिला हैं, जिनके हम सभी आभारी हैं ।

आर. के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

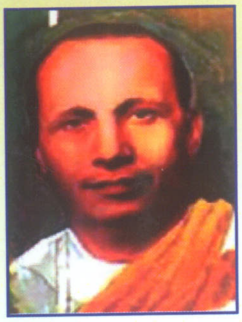

जयशंकर प्रसाद

(30 जनवरी, 1889 – 14 जनवरी, 1937)

सब जीवन बीता जाता है

सब जीवन बीता जाता है
धूप छाँह के खेल सदृश
सब जीवन बीता जाता है।

समय भागता है प्रतिक्षण में,
नव–अतीत के तुषार कण में,
हमें लगा कर भविष्य–रण में,
आप कहाँ छिप जाता है
सब जीवन बीता जाता है।

बुल्ले, नहर, हवा के झोंके,
मेघ और बिजली के टोंके,
किसका साहस है कुछ रोके,
जीवन का वह नाता है
सब जीवन बीता जाता है।

वंशी को बस बज जाने दो,
मीठी मीड़ों को आने दो,
आँख बंद करके गाने दो,
जो कुछ हमको आता है
सब जीवन बीता जाता है।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation
पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सैक्टर–18, गुड़गांव–122 015, (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392,
ई–मेल : *hindi@wapcos.gov.in* वेबसाईट : *www.wapcos.gov.in*